कर्म-रहस्य

आशीषानुकंपा
शताब्दी देशनाचार्य प.पू.108
श्री विशुद्धसागरजी मुनिराज

प्रस्तुति
श्रुतसंवेगी श्रमण 108 आदित्यसागरजी

प्रकाशक
समर्पण समूह
जैनं वचनं सदा वंदे

आशीषानुकंपा:
शताब्दी देशनाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज

कृति :
कर्म रहस्य

प्रस्तुति :
श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी मुनिराज

सम्पादन :
श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमितसागर जी मुनिराज

सहयोग :
श्रमणरत्न सहजसागरजी मुनिराज

संस्कारण :
प्रथम - 1000 प्रतियाँ 2023
द्वितीय - 1000 प्रतियाँ 2023

प्रकाशन एवं प्राप्ति स्थान :
समर्पण समूह, भारत
भोपाल : 91790-50222
जबलपुर : 98276-07171
इन्दौर : 98260-10104
इन्दौर : 94253-16840
भीलवाड़ा : 63766-49881

आकल्पन मुद्रक :
जैन राजेश कानूगो, इंदौर
मो.: 98260-14047

रहस्य की बातें

जैन दर्शन में वर्णित कर्म-सिद्धांत सर्वविश्व मान्य है। स्वभाव, काल, ग्रह, देव, विधाता, पुण्य, ईश्वर, भाग्य, पाप, विधि, कृतान्त, नियति, यम इत्यादि सारी संज्ञाये पूर्वकृत कर्म की ही हैं। जो जैसा करेगा, उसे वै फल निश्चित ही मिलेगा। दूसरों के साथ अच्छा करने वालों का अच्छा होता है और बुरा करने वालों के साथ बुरा होता है।

जन सामान्य तक इस भाव को पहुँचाने के लिये जैन-दर्शन के अनुसार कर्म-सिद्धान्तों को समझना बहुत आवश्यक है। विभिन्न ग्रन्थों से प्राप्त विभिन्न कर्म-फल का दर्शन इस ''कर्म-रहस्य'' नामक कृति में किया गया है। कर्मोदय तभी अच्छा होगा जब करतूती अच्छी होगी। करतूती अच्छी करने के लिये ''कर्म-रहस्य'' में लिखे रहस्यों को अवश्य पढ़े!!!

॥ णमो णमो सिद्धसाहूणं ॥

16/6/23
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
मंदसौर, (म.प्र.)

- श्रुतसंवेगी आदित्यसागर मुनिराज

मेरी बात...

संपूर्ण विश्व में चराचर जीव आत्मायें अपने अपने कर्मों के अनुसार नाना योनियों में जन्म-मरण करके नाना दुःखों का भाजक बनती हुयी संसास समुद्र में परिभ्रमण कर रही हैं, जहाँ सुख तो किंचित नहीं है, जिसमें सुख मान रहे हैं उसमें केवल सुखाभास है, वह अपना वास्तविक सुख नहीं।

इसलिये श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी महाराज ने कर्मों के रहस्य को समझने के लिये एक अद्‌भुत कृति कर्म-रहस्य को संकलित करके संपूर्ण जन मानस को अपने कर्मों का प्रतिबोध कराने का सफलतम प्रयास किया है।

मेरा अहो अहो सौभाग्य रहा कि मुझ अल्पज्ञ को इस कृति के संपादन करने का सौभाग्य पूज्यश्री ने दिया। अंत में यही भावना है कि सम्पूर्ण जीवन आत्मायें अपने अपने कर्मों को अपनी आत्मा से पृथक् करके इस कृति को सफलतम बनायें।

।। विशुद्धात्मने नमः ।।

16-जून-2023
मंदसौर (म.प्र.)

- श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमितसागर जी महाराज

संदर्भित ग्रन्थ सूचि

1. प्रतिक्रमण सूत्र	:	परमेष्ठ गणधर परमेष्ठी गौतमस्वामी
2. भगवती आराधना	:	आचार्यवर्य श्री शिवार्य स्वामी
3. तत्त्वार्थसूत्र	:	आचार्यवर्य श्री उमा स्वामी
4. सर्वार्थसिद्धि	:	आचार्यवर्य श्री पूज्यपाद स्वामी
5. तत्त्वार्थराजवार्तिक	:	आचार्यवर्य श्री भट्टाकलंक स्वामी
6. तत्त्वार्थसार	:	आचार्यवर्य अमृतचन्द्र स्वामी
7. भावत्रयफलप्रदर्शी	:	आचार्यवर्य श्री कुन्थुसागर मुनिराज (ऐनापुर)

शताब्दी देशनाचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी मुनिराज

श्रमण मुनिश्री 108
अप्रमितसागर जी महाराज

श्रमण मुनिश्री 108
आदित्यसागर जी महाराज

श्रमण मुनिश्री 108
सहजसागर जी महाराज

कर्म-रहस्य

भाग-1

[अशुभ-फल-प्रदर्शन]

कहाँ, क्या लिखा है?

विषय अशुभफल-प्रदर्शन	पृष्ठ
शोक की प्राप्ति क्यों होती है?	1
संसार में लोग गरीब क्यों होते हैं?	2
संसार में अनादर और निंदा क्यों होती है?	3
कलह करने वाली पत्नी किसको प्राप्त होती है?	4
कलह करनेवाला पति किसको प्राप्त होता है?	5
मल-मूत्र में कीड़ा कौन बनता है?	6
यह जीव घर-परिवार का त्याग क्यों नहीं कर पाता?	7
कौन से कार्य करने से मनुष्य अंधा होता है?	8
क्या करने से लूला, लंगड़ा और अपांग होना पड़ता है?	9
शिकारी कौन बनता है?	10
किसको कुपुत्री की प्राप्ति होती है?	11
दूसरों को ठगनेवाला कौन बनता है?	12
इंसान बहिरा क्यों होता है?	13
किन कारणों से इंसान गूँगा होता है?	14
किन कर्मों से इंसान बदमाश होता है?	15
संसार में लोग रोगी क्यों होते हैं?	16

विषय अशुभफल-प्रदर्शन	पृष्ठ
दुःख देनेवाला कुटुंब क्यों प्राप्त होता है?	17
किन कारणों से मनुष्य दुष्ट-स्वभावी होता है?	18
किन पापकर्मों के उदय से मनुष्य भयभीत- स्वभावी होता है?	19
किन कारणों से मनुष्य कमज़ोर होता है?	20
कंजूस स्वभाव होने का क्या कारण है?	21
मूर्ख कौन बनता है?	22
संसार में मनुष्य को पराधीन क्यों होना पड़ता है?	23
लोग सामग्री प्राप्त करके भी उनका उपयोग क्यों नहीं कर पाते हैं?	24
बदसूरत/ कुरूपी होने का क्या कारण है?	25
किन कारणों से मनुष्य उत्तम वस्तुयें प्राप्त करके भी उनका भोग नहीं कर पाता है?	26
किन कर्मों से मनुष्य क्रोधी स्वभाव का होता है?	27
निंदनीय होने का क्या कारण है?	28
आदर-सत्कार न प्राप्त होने का क्या कारण है?	29

कहाँ, क्या लिखा है?

विषय अशुभफल-प्रदर्शन	पृष्ठ	विषय अशुभफल-प्रदर्शन	पृष्ठ
● किन कारणों से मनुष्य अस्त्र-शस्त्र से, मारे जाते हैं?	30	● अशुभस्थानों में किसका जन्म होता है?	43
● चोर होने का क्या कारण है?	31	● किन कारणों से मनुष्य व्यवहार-शून्य होता है?	44
● धार्मिक-क्रिया में अरुचि का क्या कारण है?	32	● अधिक भोजन करनेवाला कौन होता है?	45
● पुत्र के वियोग का दुःख, किन कारणों से होता है?	33	● कौन कुत्सित/ कामशास्त्रों की रचना करता है?	46
● सगे भाइयों का परस्पर में विरोध क्यों होता है?	34	● किन कर्मों से इंसान अधिक भार ढोने वाला होता है?	47
● माता और पुत्र का परस्पर में विरोध क्यों होता है?	35	● किन कारणों से मनुष्य दीर्घायु पाकर भी महादुःखी होता है?	48
● कैसे जाना जाता है कि स्त्री के गर्भ में दुर्भाग्यशाली पुत्र आया है?	36	● नपुंसक होने का क्या कारण है?	49
● पिता-पुत्र का परस्पर में विरोध क्यों देखा जाता है?	37	● इल्ली, चींटी, खटमल मक्खी आदि कौन बनता है?	50
● किन कारणों से इंसान लगड़ा होता है ?	38	● किन कर्मों के कारण नौकर बनना पड़ता है?	51
● नरक क्यों जाना पड़ता है?	39	● स्त्री-पर्याय क्यों प्राप्त होती है ?	52
● किन कारणों से बौना शरीर प्राप्त होता है?	40	● पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति की पर्याय में क्यों पैदा होना पड़ता है?	53
● किन कर्मों से पशु/जानवर बनना पड़ता है?	41	● किन कर्मों से इंसान अंग-उपांग हीन होता है?	54
● कुभोगभूमि में कौन उत्पन्न होता है?	42		

कहाँ, क्या लिखा है?

विषय अशुभफल-प्रदर्शन	पृष्ठ	विषय अशुभफल-प्रदर्शन	पृष्ठ
● नीचकुल में उत्पन्न होने का क्या कारण है?	55	● कुत्ता होने का क्या कारण है?	69
● किन कारणों से इंसान उच्चकुल में पैदा होकर भी धनहीन होता है?	56	● किन कारणों से इंसान बिल्ली बनता है?	70
● पैसा कमाने के लिये यहाँ-वहाँ क्यों घूमना पड़ता है?	57	● किन कारणों से इंसान शेर बनता है?	71
● छलपूर्वक पैसा कमाने का भाव क्यों होता है?	58	● किन कारणों से इंसान शियार बानता है?	72
● पशु होकर घर-घर बिकने का क्या कारण है?	59	● किन कारणों से इंसान अपने व्रतों और शील को भंग करता है?	73
● किन कारणों से एक साथ अनेक जीवों की मृत्यु होती है?	60	● किन कारणों से इंसान गाय बनता है?	74
● स्त्री-पुरुष के हृदय में परस्पर के लिये कामवासना क्यों उत्पन्न होती है ?	61	● किन कारणों से इंसान भैंसा बनता है?	75
● किन कारणों से क्रोध उत्पन्न होता है?	62	● किन कारणों से इंसान बकरा बनता है?	76
● एक साथ अनेक जीवों के रोगी होने का क्या कारण है ?	63	● किन कारणों से इंसान कौआ बनता है?	77
● बहु-प्रयत्न करने पर भी रोगों की शान्ति क्यों नहीं होती?	64	● किन कारणों से इंसान दुष्ट-स्वभावी बनता है?	78
● स्त्रियों के गर्भपात होने का क्या कारण है?	65	● किन कारणों से इंसान व्यभिचारी होता है?	79
● किन कारणों से दुर्व्यसनों में धन खर्च होता है?	66	● किन कारणों से इंसान पागल पैदा होता है?	80
● किन कारणों से श्रेष्ठ/सम्यग्ज्ञान में रुचि नहीं होती है?	67		
● किसकी मृत्यु चांडाल के हाथ से होती है?	68		

कहाँ, क्या लिखा है?

विषय अशुभफल-प्रदर्शन	पृष्ठ
किन कारणों से इंसान जेल में जाता है?	81
उत्पन्न होते ही मर जाने का क्या कारण है?	82
अकस्मात् मरण होने का क्या कारण है?	83
किन कारणों से धन, घरादि जल जाते हैं?	84
किन कारणों से स्त्री-पुत्रादि का वियोग होता है?	85
कमाये अथवा प्राप्त धन का नाश क्यों होता है?	86
कण्ठ में गाँठ होने का क्या कारण है?	87
इंसान मरकर ऊँट किन कर्मों से बनता है?	88
इंसान मरकर हाथी क्यों बनता है?	89
इंसान किन कारणों से जोंक बनता है?	90
इंसान किन कारणों से उल्लू बनता है?	91
किन कारणों से मनुष्य मच्छर / डांस बनना पड़ता है?	92
इंसान किन कारणों से साँप बनता है?	93
इंसान किन कारणों से बिच्छू बनता है?	94
चिड़िया बनने का क्या कारण है?	95
इंसान मरकर तोता क्यों बनता है?	96
किन कर्मों से मनुष्य वृक्ष बन जाता है ?	97
किन कारणों से इंसान मयूर बनता है?	98
किन कर्मों से इंसान गृद्ध बनता है?	99
किन कर्मों के कारण इंसान बंदर बनता है?	100
किन कर्मों के कारण इंसान साधर्मियों के साथ विवाद करता है?	101
किन कर्मों से राजा रंक / दरिद्री हो जाता है?	102
किस कारण से इंसान कुदेव-कुशास्त्र और कुगुरुओं की प्रशंसा करता है?	103
किन कर्मों से मनुष्य घर स्त्री आदि से रहित होता है?	104
किन कर्मों से इंसान कीड़े-मकौड़े बनता है?	105
इंसान के शक्तिहीन होने का क्या कारण है?	106
श्रेष्ठ कार्य करने पर भी इंसान की निंदा क्यों होती है?	107

कहाँ, क्या लिखा है?

विषय अशुभफल-प्रदर्शन	पृष्ठ	
● उत्तम - कार्य करने पर भी मनुष्य को धनादि की हानि क्यों होती है?	108	
● देश और ग्रामादि में वर्षा न होने का क्या कारण है?	109	
● मनुष्य पुण्यकार्य करनेवालों के साथ वैर विरोध क्यों करता है?	110	
● किन कारणों से बुद्धि विपरीत हो जाती है?	111	
● ज्ञान की प्राप्ति में बाधा क्यों आती है अथवा जल्दी याद न होने का क्या कारण है?	112	
● दृष्टि में बाधा का अथवा आँखों में कमज़ोरी आने का क्या कारण है?	115	
● मनुष्यों को दुःख के दिन क्यों आते हैं?	118	
● सत्यधर्म, प्रभु, शास्त्र और गुरुओं पर श्रद्धा स्थिर न होने का क्या कारण है?	122	
● योग्यता होने पर भी चारित्र की प्राप्ति का भाव क्यों नहीं होता है?	124	
● दुर्गति/असमाधि किन कारणों से होती है?	126	

1. शोक की प्राप्ति क्यों होती है?

- शोकाकुल मनुष्यों को देखकर संतुष्ट होने से,
- द्वेष-बुद्धि से अन्य मनुष्यों को दुःख देने से,
- अपने हृदय में किसी के साथ वैर- विरोध करके संतुष्ट होने से;

→ **दुनिया में लोग शोक को प्राप्त होते हैं, दुःखी होते हैं !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 3)

2. संसार में लोग गरीब क्यों होते हैं?

- सत्पात्रों के निमित्त अपना धन खर्च न करने से,
- बलपूर्वक दूसरों का धन हर लेने से,
- अन्य कंजूसों को देखकर संतुष्ट होने से,
- धनहीनों का अपमान करके संतुष्ट होने से,

→ **आने वाले जन्म में मनुष्य निर्धन / गरीब होते हैं !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 4,48)

3. संसार में अनादर और निंदा क्यों होती है?

- सच्चे देव, सच्चे शास्त्र और सच्चे गुरुओं का अपमान-निंदा करके अपने हृदय में संतुष्ट होने से,

→ **मनुष्य सभी जगह अपमानित होते हैं, सदा काल उनकी निंदा होती है और अगले जन्म में अपयश फैलता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 5)

4. कलह करने वाली स्त्री/पत्नी किसको प्राप्त होती है?

- जो अपनी पत्नी के साथ दिन-रात लड़ता रहता है,
- द्वेष के कारण सदाचारिणी स्त्रियों की निंदा करता रहता है,
- कलह करने वाली स्त्रियों को देखकर अत्यन्त संतुष्ट होता है;

→ **ऐसा मनुष्य अगले जन्म में कलह करने वाली पत्नी प्राप्त करता है!!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 6)

5. कलह करनेवाला पति किसको प्राप्त होता है?

- जो अपने पति के साथ कलह करके प्रसन्न होती है,
- व्यभिचारी पुरुषों को देखकर प्रसन्न होती है,
- सदाचारी और विनयी पति से द्वेष करती है;

→ **ऐसी स्त्री अगले जन्म में कलह करने वाले पति को प्राप्त करती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 7)

6. मल-मूत्र में कीड़ा कौन बनता है?

- जो दुर्गंध-युक्त और अत्यन्त मलिन अन्न-पान का सेवन करता है,
- मलिन-दुर्गंध-युक्त मांसादि को खाता है,
- हमेशा शराबादि पीता है;

→ ऐसा मनुष्य मरकर पशुओं के मल-मूत्र में कीड़ा होता है!!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 8)

7. यह जीव घर-परिवार का त्याग क्यों नहीं कर पाता है?

- पहले अनेक भवों में इन्द्रिय विषयों में तल्लीन होने से,
- कुदेव, कुशास्त्र और कुगुरुओं का भक्त बनने से,
- पूर्वभवों के संस्कारों के निमित्त से;

→ **यह जीव अपने घर, बंधु, मित्र, स्त्री, धनादि को नहीं छोड़ पाता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 9)

8. कौन से कार्य करने से मनुष्य अंधा होता है?

- बलपूर्वक दूसरों के नेत्र फोड़ने से,
- दूसरों की सुन्दर स्त्री और धनादि का हरण करने से,
- अभिमान के कारण अंधों का अपमान करने से,

→ **मनुष्य मरकर अगले जन्म में अंधा होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 10)

9. क्या करने से लूला, लंगड़ा और अपांग होना पड़ता है?

- अपने किसी भी स्वार्थवशात् मनुष्य और पशुओं के हाथ-पैर काटने से, लूले, लंगड़े और अपांग लोगों को देखकर प्रसन्न होने से;

→ **मनुष्य मरकर अगले जन्म में लूला, लंगड़ा और अपांग (अपाहिज़) होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 11)

10. शिकारी कौन बनता है?

- जो मांस का भक्षण करता है,
- शराब पीता है,
- अनेक प्राणियों को मारता है/ घात करता है,
- धर्म से द्वेष करता है,
- सर्वत्र लड़ाई, झगड़ा और कलह करता है;

→ **ऐसा मनुष्य मरकर अगले जन्म में धर्म-कर्म से रहित शिकारी बनता है!!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 12)

11. किसको कुपुत्री की प्राप्ति होती है?

- जो अपने किसी बंधु आदि का अपमान करने के लिये, किसी अन्य सुन्दर कन्या को दिखाकर उसके साथ अन्य निंदनीय कन्या की शादी करा देता है;

→ **उस अभागे को अगले जन्म में कुल का नाम बदनाम करने वाली कन्या की प्राप्ति होती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 13)

12. दूसरों को ठगने वाला कौन बनता है?

- जो मन में कुछ और ही चिंतन करता है, वचनों से कुछ और ही बात करता है तथा शरीर से कुछ और ही काम करता है,
- संसार को ठगता रहता है;

→ **ऐसा मनुष्य खोटे संस्कारों के निमित्त से अगले जन्म में भाग्यहीन ठग होता है!!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 14)

13. इंसान बहिरा क्यों होता है ?

- मनुष्यों की बुरी कथायें सुनकर प्रसन्न होने से,
- बहिरे लोगों का अपमान करके प्रसन्न होने से,
- किसी के वचनों को सुनकर भी न सुनने के समान बैठने से,

→ **मूर्ख मनुष्य अगले जन्म में बहिरा पैदा होता है अथवा बहिरा हो जाता है !!!**

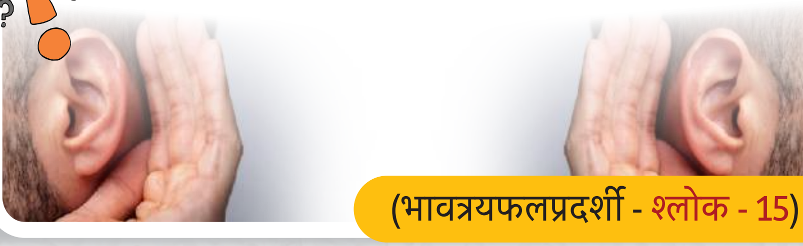

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 15)

14. किन कारणों से इंसान गूँगा होता है?

- निर्ग्रन्थ-दिगंबर मुनियों की निंदा करने से,
- जिह्वा का लोलूपी होकर मांस और जीवों का कलेवर अथवा अभक्ष्य चीजें खाने से;

→ मनुष्य मरकर अगले जन्म में अवश्य ही गूँगा होता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 16)

15. किन कर्मों से इंसान बदमाश या धूर्त होता है?

- निष्प्रयोजन लोभ करने से,
- व्यसनों में लीन रहने से,
- नास्तिकवाद मत को मानने से,
- परलोक / आगामी भव न मानने से;

→ **मनुष्य इस संसार में अत्यन्त बदमाश शठ या धूर्त होता है!!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 17)

16. संसार में लोग रोगी क्यों होते है?

- कभी भी किसी भी रोगी को औषधि का दान न देने से,
- किसी भी रोगी की सेवा न करने से,
- अभिमान वश रोगी की निंदा करने से ;

→ **अभागा मनुष्य मरकर अगले जन्म में रोगी ही होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 18)

17. दुःख देनेवाला कुटुंब क्यों प्राप्त होता है?

- किसी की भी परस्पर कलह कराकर प्रसन्न होने से,
- न कहने योग्य दुष्ट-वचनों को कहकर प्रसन्न होने से,
- किसी के ऊपर बहुत बड़ा कलंक लगाकर प्रसन्न होने से,

→ **मनुष्य को अगले जन्म में दुःख देनेवाला कुटुंब प्राप्त होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 19)

18. किन कारणों से मनुष्य दुष्ट स्वभावी होता है?

- जो नरकगति से आया हो,
- दुर्बुद्धि को धारण करने वाला हो,
- दुष्ट-पुरुषों की संगति में रहता हो,
- जिसने पहले मनुष्य-आयु का बंध कर लिया हो और फिर कुमार्गी हो गया हो;

→ **ऐसा मनुष्य अगले जन्म में दुष्ट स्वभाव को धारण करने वाला होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 20)

19. किन पाप कर्मों के उदय से मनुष्य भयभीत स्वभावी होता है?

- डराकर किसी राजा या भूत-पिशाचों (व्यंतर) का धन हरण करने से,
- किसी को उसके घर से निकाल देने से,
- किसी को घर से निकालकर मार देने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में सदाकाल भयभीत ही रहता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 21)

20. किन कारणों से मनुष्य अशक्त/ कमजोर होता है ?

- निर्दोष लोगों के अन्न-पान या वस्त्रों को हरने से,
- निर्दोष जीवों को मारकर संतुष्ट होने से,
- छोटे-छोटे जीवों को मारकर, बाँधकर, अथवा पीटकर संतुष्ट होने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में अशक्त या कमजोर या अयोग्य होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 22)

21. कंजूस स्वभाव होने का क्या कारण है ?

- किसी को दान देने में अनेक विघ्न करने से,
- धर्म में धन खर्च करने वालों को रोकने से,
- धन के उपार्जन में विशेष लोभ करने से;

→ **मनुष्य मरकर अगले जन्म में इस पृथ्वी पर कंजूस स्वभाव वाला होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 23)

22. मूर्ख कौन बनता है?

- जिनेन्द्र देव के द्वारा कहे हुये शास्त्रों की निंदा करने से,
- जैनशास्त्रों के जानकार विद्वानों की निंदा करने से,
- जैनशास्त्रों के पठन-पाठन में अपना चित्त न लगाने से,
- उत्तम निर्ग्रन्थ गुरुओं का अपमान करने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में भाग्यहीन मुर्ख पैदा होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 24)

23. संसार में मनुष्यों को पराधीन क्यों होना पड़ता है?

- अत्यन्तदीन और अपराध रहित मनुष्यों को बलपूर्वक पकड़कर बंदीगृह में डालने से,
- बंदीगृह में डाले हुये मनुष्यों का अन्न-पान बंद करके संतुष्ट होने से ;

→ अगले जन्म में मनुष्य पराधीन हो जाता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 25)

24. लोग पदार्थ/ सामग्री प्राप्त करके भी उनका उपभोग क्यों नहीं कर पाते हैं?

- अपनी द्वेषबुद्धि से किसी के शयन, आसनादि उपभोगों के पदार्थों में विघ्न करने से,
- किसी के भोजनादि भोगों के पदार्थों में विघ्न करने से,
- अत्यन्त भूखे मनुष्य को देखकर उनका अपमान करने से;

→ **मनुष्य भोगोपभोग की सामग्री प्राप्त होने पर भी उसका उपभोग नहीं कर पाता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 26)

25. भाग्यहीन कुरूपी/बदसूरत होने का क्या कारण है?

- किसी कुरूपी/बदसूरत का अपमान करने से,
- किसी के सुंदर शरीर में कुछ लगाकर उसे बिगाड़ने से,
- किसी के सुंदर शरीर की सुंदरता बिगाड़ने के लिये किसी भी प्रकार का कुत्सित प्रयत्न करने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में कुरूपी अथवा बदसूरत पैदा होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 27)

26. किन कारणों से मनुष्य उत्तम वस्तुयें प्राप्त करके भी उनका भोग नहीं कर पाता है?

- दूसरों की सुंदर स्त्रियों को देखकर अथवा किसी की श्रेष्ठ वस्तु को देखकर अपने हृदय में संतोष न धारण करने से,
- उनके सेवन करने की इच्छा करने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में अपने घर उत्तम से उत्तम पदार्थ या स्त्री के रहने पर भी किसी का उपभोग नहीं कर पाता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 28)

27. मनुष्य पूर्व संस्कारों के निमित्त से अत्यन्त क्रोधी और महादुःखी होता है !!!

- अत्यन्त क्रोधी होने से,
- मनुष्यों को परस्पर क्रोध करते हुये या लड़ते हुये देखकर संतुष्ट होने से;

→ **मनुष्य पूर्व संस्कारों के निमित्त से अत्यन्त क्रोधी और महादुःखी होता है !!!**

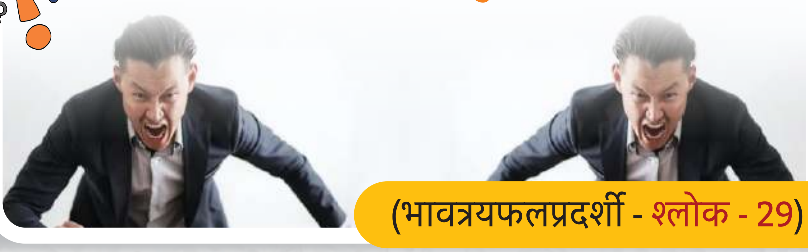

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 29)

28. निंदनीय होने का क्या कारण है?

- हठपूर्वक तपश्चरण में दोष लगाने से,
- केवल अपनी कीर्ति के लिये अपना धन खर्च करने से,
- पाखंडी साधुओं की प्रशंसा करने से,
- देव, धर्म और गुरुओं की निंदा करने से,
- अधार्मिक पुरुषों की संगति करने से,
- दूसरों का धन हरण करने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में अत्यन्त निंदनीय होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 30)

29. आदर-सत्कार न प्राप्त होने का क्या कारण है?

- अपनी विद्या के अभिमान के कारण निर्ग्रंथ साधुओं को प्रणाम न करने से,
- उनकी स्तुति न करने से,
- उनकी विनय न करने से,
- उनकी सेवा न करने से,
- हमेशा धर्म के विरुद्ध प्रवृत्ति करने से;

→ **मनुष्य को याचना करने पर भी आदर-सत्कार नहीं प्राप्त होता !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 31)

30. किन कारणों से जीव अस्त्र-शस्त्र से मारे जाते हैं?

- जीव हिंसा की प्रशंसा करने से,
- उसकी अनुमोदना करने से,
- हिंसा के अनेक उपाय बताने से,
- अनेक प्रकार के दुष्ट चरित्र करने से;

→ **जीव प्राय: दूसरों के अस्त्र-शस्त्रों से मारे जाते हैं !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 32)

31. चोर होने का क्या कारण है?

- चोरों की प्रशंसा करने से,
- चोरों की अनुमोदना करने से,
- चोरों के द्वारा की हुई चोरी की अनुमोदना करने से,
- चोरी का प्रयोग बतलाने से,
- दूसरों के राज्य या रत्नों की इच्छा करने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में भाग्यहीन चोर होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 33)

32. धार्मिक-क्रिया में अरुचि का क्या कारण है?

- क्रियाहीन - अधार्मिक मनुष्य की प्रशंसा करने से,
- धार्मिक क्रियाओं का पालन करनेवालों की निंदा करने से,
- विचार रहित मिथ्यापोषक शास्त्रों के अनुकूल प्रवृत्ति करने से,
- सत्शास्त्रों के प्रतिकूल प्रवृत्ति करने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में धार्मिक-क्रियाओं में अरुचि करनेवाला होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 34)

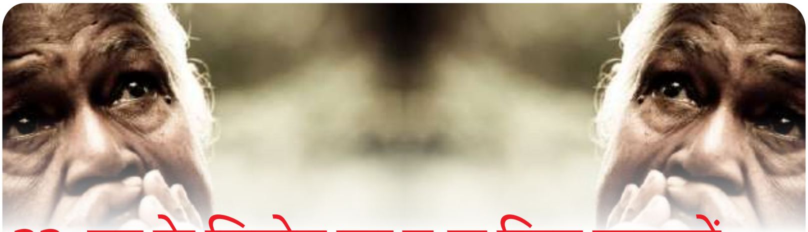

33. पुत्र के वियोग का दुःख किन कारणों से होता है ?

- माता-पिता की स्नेह करनेवाली प्रवृत्ति को देखकर क्रोध करने से,
- धर्मात्मा भाइयों के परस्पर अनुराग को देखकर क्रोध करने से,
- अत्यन्त दुःख देनेवाले परस्पर के ईर्ष्या-द्वेष को देखकर संतुष्ट होने से;

→ **मनुष्य पुत्र-पौत्रादि के वियोग के दुःख को प्राप्त होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 35)

34. सगे भाइयों का परस्पर में विरोध क्यों होता है?

- भाई-भाई में अथवा पशु-पक्षियों में परस्पर कलह और दुःख उत्पन्न करके प्रसन्न होने से,
- अपने भाई-बन्धुओं का अपमान करने से;

→ **मनुष्य अगले भव में अपने सगे भाई- बंधुओं से विरोध करता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 36)

35. माता और पुत्र का परस्पर में विरोध क्यों होता है?

- माँ और पुत्र का विरोध करा देने से,
- माँ के घोर - अपमान से संतुष्ट होने से,
- विद्वान पुत्र के घोर अपमान से संतुष्ट होने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में माँ के साथ वैर-विरोध को प्राप्त होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 37)

36. कैसे जाना जाता है कि स्त्री के गर्भ में दुर्भाग्यशाली पुत्र आया है?

- संतान के गर्भ में आते ही माँ पर अनेक आपत्तियाँ आ जायें तो,
- पिता की बुद्धि विपरीत हो जाये तो,
- माता-पिता दोनों की बुद्धि अभक्ष्य भक्षण में लग जाये तो,
- माता-पिता की बुद्धि निकृष्ट कार्यों में लग जाये तो;

→ **समझ लेना चाहिये कि गर्भ में भाग्यहीन संतान आई है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 38)

37. पिता-पुत्र का परस्पर में विरोध क्यों देखा जाता है?

- एक-दूसरे के साथ भारी विवाद कराने से,
- पिता-पुत्र की कलह को देखकर अत्यन्त प्रसन्न होने से,
- गुरुजनों की विनय न करने से;

→ **पिता-पुत्र का इस पृथ्वी में विरोध देखा जाता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 39)

38. किन कारणों से इंसान लंगड़ा होता है?

- अपने अस्त्र-शस्त्रों से दूसरों के हाथ पैरों को काटने से,
- दूसरों के कान-नाक काटने से,
- दूसरों के नेत्र फोड़ देने से,
- अभिमान से लूले-लंगड़े अपांग पुरुषों का तिरस्कार करने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में लूला-लंगड़ा- अपांग होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 40)

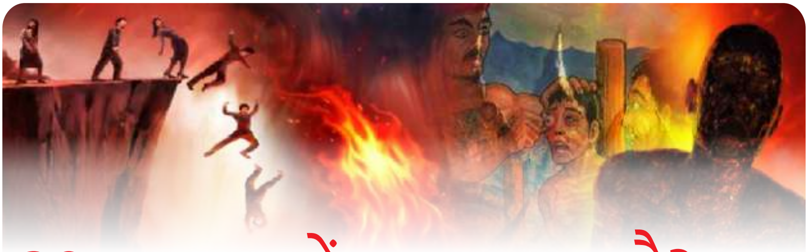

39. नरक क्यों जाना पड़ता है?

- अत्यन्त क्रोध करने से,
- पर के प्राणों का घात करने से,
- देव, धर्म और गुरु का विरोध करते रहने से,
- स्व-बन्धुओं के साथ वैर-विरोध करते रहने से;

→ **पापमूर्ती मनुष्य अवश्य ही नरक को जाता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 41)

40. किन कारणों से बौना शरीर प्राप्त होता है?

- अपने शरीर के अभिमान से छोटे-बौने शरीर वालों की निंदा करने से,
- उनका अपमान करने से,
- उनका घात करने से,
- उनको दुःख देने की इच्छा करने से;

→ **इंसान अगले किसी जन्म में छोटे कद वाला बौना शरीर प्राप्त करता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 42)

41. किन कर्मों से पशु/जानवर बनना पड़ता है?

- उत्तम आचरण रहित मनुष्यों की प्रशंसा करने से,
- अभक्ष्य भोजन करने से,
- देव, धर्म और गुरुजनों की निंदा करने से,
- पशुओं पर अधिक बोझ लादने से,
- जीवों के अन्न-पान को रोक देने से;

→ **मनुष्य मरकर इस पृथ्वी में जानवर / पशुयोनि में जन्म लेता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 43)

42. कुभोग भूमि में कौन उत्पन्न होता है?

- जो मिथ्यादृष्टि साधुओं को अन्न, पान और औषध आदि का दान देता है,
- जो सम्यग्दृष्टि उत्तम साधुओं का अपमान करता है;

→ **ऐसा मनुष्य मरकर कुभोगभूमि में उत्पन्न होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 44)

43. कुग्रामवासी अथवा अशुभ स्थानों में किसका जन्म होता है?

- जो अन्य लोगों पर झूठा दोष लगाकर हठपूर्वक गाँव से निकाल देता है,
- अशुभ-क्षेत्रों में रहनेवालों की प्रशंसा करता है;

→ **वह मनुष्य अपने दुष्ट परिणामों से मरकर अशुभ स्थानों मे जन्म लेकर कुग्रामवासी होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 45)

44. किन कारणों से मनुष्य व्यवहार-शून्य होता है?

- किसी व्यवहार कुशल मनुष्य को देखकर व्यर्थ क्रोध करने से,
- व्यर्थ का अभिमान कर संतुष्ट होने से,
- अज्ञानता वशात् बुद्धिमान पुरुषों की निंदा करने से;

→ **मनुष्य आगे जन्म लेकर व्यवहार-शून्य होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 46)

45. अधिक भोजन करनेवाला कौन होता है?

- जो पशु-पक्षियों के लिये दिये हुये अन्न को बलपूर्वक स्वयं खाता है,
- हमेशा खाने-पीने में ही लगा रहता है,
- जो दान कभी नहीं देता है;

→ **ऐसा बुद्धि और पुण्य क्षीण मनुष्य मरकर अधिक भोजन करनेवाला होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी- श्लोक - 47)

46. कौन कुत्सित/कामशास्त्रों की रचना करता है?

- जो कामशास्त्रों में रुचि रखता है,
- जिनसे क्रोध - माया की शिक्षा मिलती हैं; ऐसी दंतकथाओं को सुनकर संतुष्ट होता है,
- कामशास्त्रों के प्रकाशनादि में दान देकर संतुष्ट होता है;

→ **ऐसा मनुष्य मरकर कुत्सित/ कामशास्त्रों की रचना और उन्हें जानने में निपुण होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 49)

47. किन कर्मों से इंसान अधिक भार ढोनेवाला होता है?

- दीन पशुओं पर अधिक बोझ लादकर प्रसन्न होने से,
- छलपूर्वक पशु व मनुष्यों से उनकी शक्ति से अधिक काम कराकर प्रसन्न होने से,
- दीन पशुओं को ताड़ना देकर प्रसन्न होने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में अधिक बोझ / भार ढोनेवाला होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 50)

48. किन कारणों से मनुष्य दीर्घायु पाकर भी महादुःखी होता है?

- बिना कारण वृक्षों को काटने से,
- छोटे-छोटे पौधों को काटने से,
- बिना कारण पृथ्वी को खोदने से,
- बिना कारण हठपूर्वक सभी जीवों को दुःख पहुँचाने से;

→ **मनुष्य दीर्घायु पाकर भी महादुःखी होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 51)

49. नपुंसक होने का क्या कारण है?

- काम सेवन के अंगों को छोड़कर अन्य अंगों से काम सेवन करने से,
- निंदनीय हसी करने में प्रेम रखने से,
- नपुंसकों की निंदा करने से,
- अत्यन्त तीव्र काम सेवन करने से,
- परस्त्रियों के सेवन के लिये अनेक प्रयत्न करने से;

→ **मनुष्य मरकर नपुंसक बनता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 52)

50. इल्ली, चींटी, खटमल मक्खी आदि कौन बनता है?

- जो अत्यन्त निर्दयता के साथ इल्ली आदि जीवों को दुःख देता है,
- उनको ताड़ना देता है, मारता है,
- अनेक चींटी आदि जीवों को घेरा बनाकर बंद कर देता है;

→ **ऐसा मनुष्य मरकर इल्ली, चींटी, खटमल, मक्खी, जोंक आदि बनता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 53)

51. किन कर्मों के कारण नौकर बनना पड़ता है?

- किसी दीन मनुष्य को अपने घर का काम कराकर सिर्फ धन देने से और लोभ के कारण स्वप्न में भी कभी उनको धीरज नहीं देने से;

→ **मनुष्य मरकर आगे जाकर दूसरों का दास बनता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 54)

52. स्त्री- पर्याय क्यों प्राप्त होती है?

- स्त्री का वेश धारण करने वाले मनुष्य को देखकर संतुष्ट होने से,
- हमेशा स्त्रियों की अभिलाषा करने से,
- स्त्रियों के जैसे हसने, चलने और बातचीत करने से;

→ **मनुष्य अवश्य ही अगले जन्म में स्त्री बनता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 55)

53. पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति की पर्याय में क्यों पैदा होना पड़ता है?

- अरहंत भगवान, अहिंसाधर्म और निर्ग्रंथ गुरुओं की निंदा करने से,
- श्रेष्ठ/ उत्तम आचरण को निंदा करने से,
- कुदेव, कुधर्म/हिंसा और कुगुरुओं की प्रशंसा करने से;

→ **मनुष्य मरकर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति की पर्याय में उत्पन्न होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 56)

54. किन कर्मों से इंसान अंग-उपांग हीन होता है?

- दूसरों के अंग-उपांगों को काटने से,
- दूसरों का घर नष्ट करने से,
- अंग- उपांग हीन अर्थात् विकलांगों को देखकर प्रसन्न होने से;

→ **इंसान अगले जन्म में अंग-उपांगहीन पैदा होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 57)

55. नीचकुल में उत्पन्न होने का क्या कारण है?

- अपने मुख से अपनी प्रशंसा और दूसरों की निंदा करने से,
- अभिमान और उच्चकुल को न जानने के कारण उत्तम कुल की निंदा करने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में नीच कुल में पैदा होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 58)

56. किन कारणों से इंसान उच्चकुल में पैदा होकर भी धनहीन होता है?

- पहले शुभ- भावों के निमित्त से उच्चगोत्र का बंध करके, फिर अभिमान से दूसरों की निंदा करने से,
- अभिमान के कारण गुरुजनों की हमेशा निंदा करने से;

→ **इंसान उच्चकुल में जन्म लेकर भी धनहीन / दरिद्री होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 59)

57. पैसा कमाने के लिये यहाँ-वहाँ क्यों घूमना पड़ता है?

- अपने नौकरों को कई बार इधर-उधर दौड़ाकर घर के काम कराने से,
- आशा दिखाकर भी धन न देने से;

→ **इंसान को धनार्जन के लिये यहाँ- वहाँ गाँव-गाँव घूमना पड़ता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 60)

58. छलपूर्वक पैसा कमाने का भाव क्यों होता है?

- साधुओं को छलपूर्वक आहारदान देने से,
- छलपूर्वक देव, शास्त्र, गुरुओं की सेवा करने से,
- दुष्ट और ठगों की प्रशंसा करने से;

→ **मनुष्य को छलपूर्वक पैसा कमाने का भाव होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 61)

59. पशु होकर घर-घर बिकने का क्या कारण है?

- छलपूर्वक किसी दूसरे की स्त्री-पुत्री को मूल्य देकर खरीद लेने से,
- छलपूर्वक किसी गाय को अथवा अन्य पशुओं को खरीद लेने से,
- छलपूर्वक सोने, बैठने के सामान और अन्न- वस्त्र लेने से,
- मायावी लोगों की प्रशंसा करने से;

→ **मनुष्य पशु होकर घर-घर बिकता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 62)

60. किन कारणों से एक साथ अनेक जीवों की मृत्यु होती है?

- अनेक लोगों के द्वारा मिलकर साधुओं की निंदा करने से,
- अनेक लोगों के द्वारा मिलकर अन्य कोई कुकर्म करने से,
- अनेक लोगों के द्वारा मिलकर पशुओं की लड़ाई देखकर प्रसन्न होने से;

→ **अनेक जीवों की मृत्यु एक साथ होती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 63)

61. स्त्री-पुरुष के हृदय में परस्पर के लिये कामवासना क्यों उत्पन्न होती है?

- पूर्वजन्म में स्त्री-पुरुषों का परस्पर संबंध या व्यभिचार रहने से,
- एक दूसरे के प्रति मोहित होकर रागभाव और हसी करने से;

→ **स्त्री-पुरुषों के हृदय में अगले जन्म में भी परस्पर मोह और कामवासना उत्पन्न होती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 64)

62. किन कारणों से, क्रोध उत्पन्न होता है ?

- मान को ठेस लगने पर तथा,
- पूर्वभव के अपने शत्रु को देखकर,
- अपने शरीर को नाश करनेवाले को देखकर,
- विरोधी को देखकर,
- कुटुंब के मनुष्य को मारनेवाले को देखकर;

→ **मनुष्य के हृदय में अवश्य ही क्रोध उत्पन्न होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 65)

63. एक साथ अनेक जीवों के रोगी होने का क्या कारण है ?

- अनेक जीवों के द्वारा मिलकर मुनियों के मलिन शरीर को देखकर ग्लानि करने से,
- उनकी निंदा करने से,
- उनका अपमान करने से;

→ **एक साथ अनेक जीव रोगी होते हैं !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 66)

64. इंसान के रोगों की शान्ति के लिये बहु- प्रयत्न करने पर भी रोग क्यों नहीं शान्त होते हैं ?

- वैद्य होकर भी रोगियों की सेवा न करने से,
- तीव्रलोभवशात् रोग का भय दिखलाकर बहुत-धन लेकर भी बहुत-थोड़ी औषधि देने से;

→ **इंसान बहु-प्रयत्न करने पर भी अपने रोगों को शान्त नहीं कर पाता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 67)

65. स्त्रियों के गर्भपात होने का क्या कारण है ?

- अपने और दूसरों की संतान को गर्भ में ही मारने से,
- किसी की संतान को मारने के लिये विष देने से,
- गर्भपात करके संतुष्ट होने से;

→ **स्त्री का गर्भपात अवश्य ही होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 68)

66. किन कारणों से दुर्व्यसनों में धन खर्च होता है ?

- हठपूर्वक अपने धन को किसी कुमार्ग में लगा देने से,
- दुर्व्यसनी मनुष्यों की प्रशंसा करने से,
- किसी की स्त्री को बलपूर्वक हरण करके संतुष्ट और प्रसन्न होने से;

→ **मनुष्यों का धन और शक्ति दुर्व्यसनों में ही खर्च होती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 69)

67. किन कारणों से श्रेष्ठ/सम्यग्ज्ञान में रुचि नहीं होती है ?

- कुशिक्षा देकर अथवा दिलाकर प्रसन्न होने से,
- अनेक मनुष्यों को कुव्यसनों में लगाकर प्रसन्न होने से,
- देव, शास्त्र और गुरुओं की निंदा करके प्रसन्न होने से,
- दुष्ट और नीच पुरुषों के वचनों को सुनकर प्रसन्न होने से;

→ **इंसान को श्रेष्ठज्ञान में रुचि नहीं होती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 70)

68. किसकी मृत्यु चांडाल के हाथ से होती है ?

- अनेक जीवों को महादुःख देने वाले हिंसा के कार्य करने से,
- पशुओं के प्राण रूपी धन को हरने से,
- मांस, शराब और मधु/शहद का रुचिपूर्वक सेवन करने से;

→ पापी लोग चांडाल के ही हाथ से मारे जाते हैं !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 71)

69. कुत्ता होने का क्या कारण है ?

- हमेशा ईर्ष्या और अभिमान करने से,
- सबके साथ वैर-विरोध करने से,
- परस्पर में विवाद करने से,
- आर्त-रौद्रध्यान का चिंतन करने से,
- व्यर्थ ही यहाँ-वहाँ घूमने से,
- मुनियों के लिये अपशब्द कहने से;

→ **मनुष्य मरकर इस पृथ्वी में कुत्ता ही होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 72)

70. किन कारणों से इंसान बिल्ली बनता है ?

- हमेशा मायाचारी करने से,
- अशुभ -दुर्ध्यान करने से,
- अन्न-पान, दूध, दही आदि की अभिलाषा से अपने भाई-बंधुओं के धन को हरने से;

→ **मनुष्य मरकर भाग्यहीन बिलाव होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 73)

71. किन कारणों से इंसान शेर बनता है ?

- हमेशा दूसरों को मारने की चिंता करने से,
- अनेक पशुओं की हिंसा करने से,
- हमेशा क्रूर स्वभाव रखने से,
- हमेशा लोगों का विरोध करने से,
- मांस खाने की तीव्र लोलुपता होने से,
- अपनी और अन्य की आत्मा का घात करने से;

→ **इंसान मरकर अवश्य ही शेर बनता है !!!**

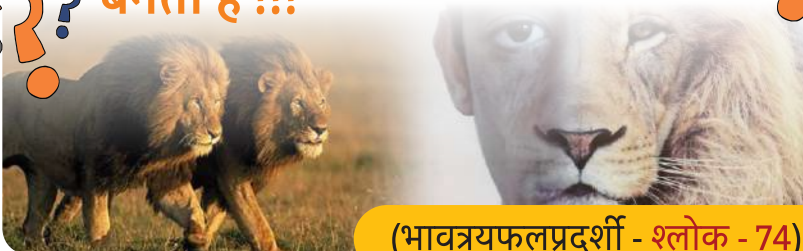

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 74)

72. किन कारणों से इंसान श्रृंगाल/ सियार होता है ?

- हमेशा मिथ्याभाषण करने से,
- हमेशा लोगों को ठगने से,
- सबके साथ ईर्ष्या-द्वेष करने से,
- सबके साथ कलह करने से,
- पात्रदान और जिनपूजा जैसे धर्मकार्यों से सदा दूर रहने से;

→ इंसान मरकर श्रृंगाल /सियार बनता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 75)

73. किन कारणों से इंसान अपने व्रतों और शील को भंग करता है ?

- दूसरों के व्रत और शील को भंग कराकर प्रसन्न होने से,
- दूसरों की निंदा करने से,
- साधुओं के चारित्र में दोष लगाने से;

→ **इंसान मरकर अगले जन्म में अपने व्रत-शीलों को को भंग करता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 76)

74. किन कारणों से इंसान गाय बनता है ?

- सदाचार रहित होने से,
- विचार-शून्य होने से,
- अभक्ष्य सामग्री खाने से,
- अन्न-पान का अत्यन्त लोलूपी होने से,
- मंदबुद्धि होने से;

→ इंसान मरकर अगले जन्म में गाय होता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 77)

75. किन कारणों से इंसान भैंसा बनता है ?

- धर्मोपदेश को कभी न सुनने से,
- केवल दोषों को ग्रहण करने से,
- सभी जगह अशान्ति उत्पन्न करने से;

→ **इंसान मरकर अगले जन्म में भैंसा होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 78)

76. किन कारणों से इंसान बकरा बनता है ?

- बिना प्रयोजन के व्यर्थ ही यहाँ-वहाँ घूमने से,
- बिना प्रयोजन बकवाद/ बोलने से,
- अपने नेत्रों को बंद करके / अंधे बनकर निंदनीय कार्य करने से,
- अपनी प्रशंसा और दूसरों की निंदा करके बहुत प्रसन्न होने से;

→ **इंसान मरकर इस पृथ्वी में बकरा बनता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 79)

77. किन कारणों से इंसान कौआ बनता है ?

- अभक्ष्य, मलिन और निंदनीय वस्तुओं को खाने से,
- दुःख देनेवाले कठोर और कड़वे वचन बोलने से;

→ **इंसान मरकर कौआ बनता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 80)

78. किन कारणों से इंसान दुष्ट-स्वभावी बनता है ?

- इस जन्म में दुष्ट पुरुषों के साथ वाद- विवाद करने से,
- किसी जुआरी, शराबी, चोरादि के साथ वाद- विवाद करने से,
- साधु और सज्जनों के साथ वाद-विवाद करने से,
- मिथ्यादृष्टि और अत्यन्त मूर्ख मनुष्यों की प्रशंसा करने से;

→ मनुष्य मरकर दुष्ट-स्वभावी बनता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 81)

79. किन कारणों से इंसान व्यभिचारी होता है ?

- इस जन्म में वेश्याओं की संगति करने से,
- अन्य व्यभिचारिणी स्त्रियों की संगति करने से,
- दुष्ट लोगों की संगति करने से,
- नपुंसकों के साथ क्रीड़ा करने से;

→ **इंसान मरकर व्यभिचारी होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 82)

80. किन कारणों से इंसान पागल पैदा होता है ?

- किसी मन्त्र-तन्त्र से अन्य जीवों को पागल बना देने से,
- पागल जीवों का अपमान करने से,
- पागलों के ऊपर क्रोधित होने का दोष आरोपण करके संतुष्ट होने से;

→ इंसान मरकर अगले जन्म में पागल पैदा होता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 83)

81. किन कारणों से इंसान बंदीगृह / जेल में जाता है ?

- अपराध रहित मनुष्यों को भी आपत्ति में डालने के लिये झूठ बोलकर बलपूर्वक बंदी- गृह में डालने से,
- निरपराधी को वन में ले जाकर बंदीगृह में डालने से;

→ **इंसान अगले जन्म में जाकर विपत्तियों को सहन करने के लिये अपने आप बंदीगृह में पहुँच जाता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 84)

82. उत्पन्न होते ही मर जाने का क्या कारण है ?

- अन्य किसी को उत्पन्न होते ही मार देने से,
- छेदन-भेदन कर देने से,
- किसी को भी उसके माँ-पिता या भाई बंधुओं से अलग कर देने से;

→ **इंसान अगले जन्म में जाकर पैदा होते ही मर जाते हैं !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 85)

83. अकस्मात् मरण होने का क्या कारण हैं ?

- किसी को विष देकर संतुष्ट होने से,
- विष के देने से होनेवाली मृत्यु को देखकर संतुष्ट होने से,
- किसी को अग्नि में फेंककर अथवा तलवार से मारकर प्रसन्न होने से;

→ **मनुष्य अकस्मात् होनेवाली अपमृत्यु से मरता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 87)

84. किन कारणों से धन, घरादि जल जाता है?

- दूसरों के धन- घरादि के नाश का प्रयत्न करने से,
- दूसरा का धन-धान्य-घरादि जला देने से,

→ **मनुष्य का घर, धन, धान्यादि भी अग्नि से अवश्य ही जलता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 88)

85. किन कारणों से स्त्री-पुत्रादि का वियोग होता है?

- पूर्वजन्म में अन्य जीवों की स्त्री, पुत्र, भाई आदि के वियोग कराने से,
- अनुमोदना करने से,
- स्वकार्य की सिद्धि के लिये दूसरों का अपमान करने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में अपने कुटुंबी जनों के वियोग को सहन करता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 89)

86. कमाये अथवा प्राप्त धन का नाश क्यों होता है?

- दूसरों के धन को हरण करने से,
- राजा आदि के द्वारा दूसरों के धन का हरण कराने से,
- जुआरी, चोर आदि की सहायता से दूसरों को हानि पहुँचाने से,

→ **मनुष्य के धनादि का नाश हो जाता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 90)

87. कण्ठ में गाँठ होने का क्या कारण है?

- किसी के कण्ठ में दुःख पहुँचाने से,
- द्वेष वश दूसरों को पीड़ा देने से,
- किसी की निंदा करने से,
- किसी के गले में होनेवाली गाँठ की कुचेष्टा करने से;

→ **मनुष्य के कण्ठ में अवश्य ही गाँठ होती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 91)

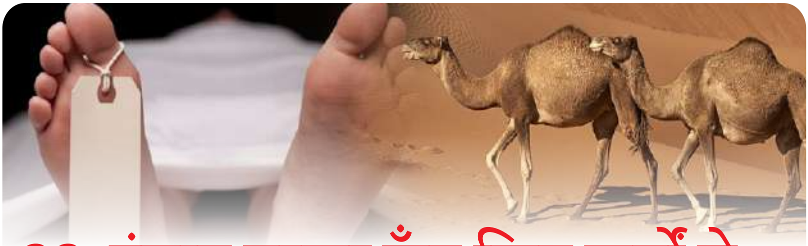

88. इंसान मरकर ऊँट किन कर्मों से बनता है?

- अरिहंत देव और गुरुओं को नमस्कार न करने से,
- ऊँची-नीची भूमि को देखकर न चलने से,
- हमेशा उद्दंड-वृत्ति को धारण करने से,
- धन के मद से उन्मत्त रहने से;

→ **मनुष्य मरकर अगले जन्म में ऊँट बनता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी- श्लोक - 92)

89. इंसान मरकर हाथी क्यों बनता है?

- व्रत-उपवास- तपश्चरण न करने से,
- जापादि न करने से,
- देव, धर्म, गुरुओं की सेवा न करने से,
- तथा केवल शरीर को पुष्ट करने से,

→ इंसान अगले जन्म में हाथी बनता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 93)

90. इंसान किन कारणों से जोंक बनता है?

- सुख देनेवाले तथा दुःख हरनेवाले दूसरों के श्रेष्ठ गुणों को छोड़कर दोषों को ग्रहण करने से,
- हमेशा श्रेष्ठ गुणों और सज्जनों का अपमान करने से,

→ **इंसान मरकर जोंक बनता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 94)

91. किन कारणों से इंसान उल्लू बनता है?

- अरिहंत भगवान का कभी भी दर्शन न करने से,
- निर्ग्रंथ-गुरुओं के वचनामृत का पान न करने से,
- निर्ग्रंथ- गुरुओं से दूर-दूर रहने से;

→ इंसान मरकर अगले जन्म में उल्लू बनता है!!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 95)

92. किन कारणों से मनुष्य को मच्छर / डांस बनना पड़ता है?

- निर्ग्रंथ गुरुओं के सामने उनकी स्तुति करके उनको नमस्कार करके; पीठ पीछे उनकी निंदा करने से,
- अन्य लोगों के सामने उन्हीं मुनियों का अपमान करने से;

→ **मनुष्य मरकर मच्छर / डांस बनता है!!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 96)

93. किन कारणों से मनुष्य साँप बनता है ?

- धर्म का स्वरूप समझकर, गुरु का उपदेश सुनकर भी अपने वैर-विरोध को न छोड़ने से,
- अपने मिथ्यात्वरूपी विष को न छोड़ने से;

→ इंसान अगले जन्म में साँप बनता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 97)

94. इंसान किन कारणों से बिच्छू बनता है?

- अपनी प्रसिद्धि के लिये अपने कुटुंबी जनों के और अन्य लोगों के हृदय में वचनों की चोट देने से,
- दांत और नेत्रों के विकारों से मनुष्यों को काटने से;

→ इंसान मरकर अगले जन्म में बिच्छू बनता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 98)

95. चिड़ियाँ बनने का क्या कारण है?

- धन का संचय करके उससे ज्ञान वृद्धि न करने से,
- दान, पूजादि श्रेष्ठ कार्यों में खर्च न करने से,
- संचित धन को केवल पेट भरने में खर्च करने से,
- अपनी संतान पालन करने में खर्च करने से;

→ इंसान मनकर चिड़ा/ चिड़िया ही बनता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 99)

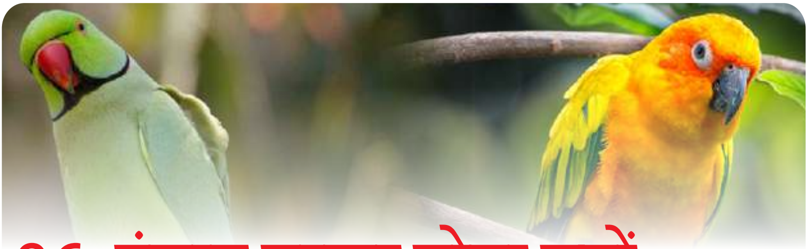

96. इंसान मरकर तोता क्यों बनता है?

- हमेशा ज्ञान, धन आदि का अभिमान करने से,
- अन्य लोगों को सुख देनेवाले कार्य कभी न करने से,
- इधर-उधर घूमते हुये केवल मीठे-वचन सुनाने से;

→ **इंसान मरकर तोता ही बनता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 100)

97. किन कर्मों से मनुष्य वृक्ष बन जाता है?

- अपने मिथ्या - अभिमान से जिनदेव को, उत्तम-अहिंसा धर्म को, सच्चे शास्त्रों को और वीतरागी गुरुओं की वंदना न करने से;

→ **मनुष्य मरकर वृक्ष बनता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 101)

98. किन कारणों से इंसान मयूर बनता है?

- आत्मा के अनुभव से उत्पन्न हुये शुद्धात्मा के रस को स्वयं न पीकर हठपूर्वक दूसरों को पिलाने का प्रयत्न करने से,
- अपने कर्तव्यों को छोड़कर दूसरों का उपकार करने का प्रयत्न करने से,

→ **मनुष्य मरकर मयूर बनता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 102)

99. किन कर्मों से इंसान गृद्ध बनता है ?

- स्वयं कभी धनोपार्जन न करने से,
- केवल कुटुंब में जाकर भोजन करने से,
- जहाँ अन्न मिल जाये वहीं चले जाने से,

→ **बेकार इंसान मरकर गृद्ध बनता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 103)

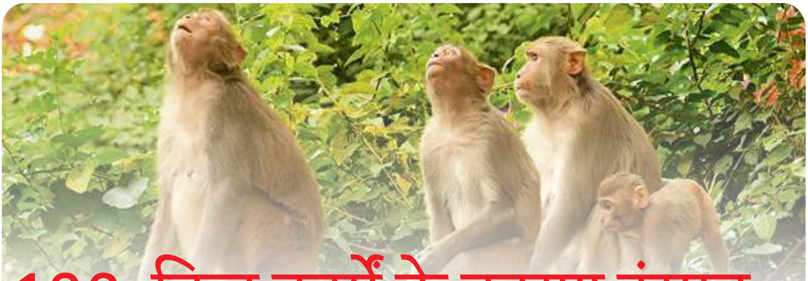

100. किन कर्मों के कारण इंसान बंदर बनता है?

- बिना कारण ही देश-विदेश में घूमने से,
- बिना कारण ही अनेक वनस्पतियों को तोड़ते फिरने से,
- बिना कारण ही जिनालय आदि धर्मायतनों को तोड़ने से,

→ **इंसान मरकर बंदर बनता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 104)

101. किन कर्मों के कारण इंसान साधर्मियों के साथ विवाद करता है?

- देव, शास्त्र और गुरु का अपमान करने से,
- अशुभ - संस्कार वशात् गुरुओं पर क्रोध करने से,
- गुरुओं के साथ वाद-विवाद करने से,

→ **इंसान मरकर अगले जन्म में साधर्मियों के साथ विवाद करता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 105)

102. किन कर्मों से राजा रंक / दरिद्री हो जाता है?

- राजा का धर्म-कर्म से रहित होने से,
- इन्द्रियों के विषयों में लीन रहने से,
- प्रजा के साथ द्वेष करने से,
- पशुओं के समान विहार करने से,
- मांस-मंदिरा का सेवन करने से;

→ **राजा रंक / दरिद्री हो जाता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 106)

103. किस कारण से इंसान कुदेव-कुशास्त्र और कुगुरु की प्रशंसा करता करता है?

- पूर्वजन्म में कुदेव-कुशास्त्र और कुगुरु की श्रद्धा, विनय और भक्ति करने से;

→ इंसान मरकर अपने संस्कारों से कुदेव,कुशास्त्र और कुगुरुओं की ही प्रशंसा करता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 107)

104. किन कर्मों से मनुष्य घर-स्त्री आदि से रहित होता है?

- मधुमक्खियों के छत्ते तोड़ने से,
- उनका शहद खा लेने से,
- बया आदि अनेक पक्षियों के घोंसले तोड़ने से,
- तीव्र लोभ के कारण पक्षियों का मांस तीव्र खाने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में घर-स्त्री आदि से रहित होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 108)

105. किन कर्मों से इंसान कीड़े-मकौड़े बनता है?

- समितियों का पालन करके छोटे-छोटे जीवों की रक्षा न करने से,
- देव-शास्त्र-गुरुओं के दर्शन न करने से,
- धन के मद से मदोन्मत्त होकर किसी भी दीन-दरिद्र को संतुष्ट न करने से,

→ इंसान मरकर कीड़े-मकौड़े बनता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 109)

106. इंसान के शक्तिहीन होने का क्या कारण है?

- निर्दय मनुष्य के द्वारा अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिये अपना बल दिखलाकर अन्य प्राणियों को मार देने से,
- उन प्राणियों को बाँधकर बंदीगृह में डाल देने से;

→ **इंसान अगले जन्म में शक्तिहीन ही होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 110)

107. श्रेष्ठ-कार्य करने पर इंसान की निंदा क्यों होती है?

- हमेशा श्रेष्ठकार्य करनेवालों की, दीन- दरिद्रियों की सहायता करनेवालों की और संसार में शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न करनेवालों की भी निंदा करने से;

→ **इंसान श्रेष्ठ-कार्य करने पर भी निंदा को ही प्राप्त होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी- श्लोक - 111)

108. उत्तम कार्य करने पर भी मनुष्य को धनादि की हानि क्यों होती है?

- दान, पूजा, जप, तप और अन्य धार्मिक कार्यों को कभी न करने से,
- सिर्फ धन-संचय में तल्लीन रहने से,

→ **मनुष्य अगले जन्म में उत्तम कार्य करके भी धनादि को प्राप्त नहीं कर पाता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 112)

109. देश और ग्रामादि में वर्षा न होने का क्या कारण है?

- देश-ग्राम में मुनि और धार्मिक जनों के न रहने से,
- देश - ग्राम में देव-पूजा और पात्र दान न होने से,
- देश-ग्राम में दुष्ट- अधार्मिक लोग ही निवास करने से;

→ **देश-ग्रामादि में अनावृष्टि अर्थात् वर्षा नहीं ती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 113)

110. मनुष्य पुण्यकार्य करनेवालों के साथ वैर- विरोध क्यों करता है?

- वैर-विरोध करनेवालों की संगति करने से,
- दुष्ट लोगों की सेवा करने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में पुण्यकार्य करनेवालों के साथ वैर-विरोध करता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 114)

111. किन कारणों से बुद्धि विपरीत हो जाती है?

- सुख और शान्ति उत्पन्न करनेवाले मनुष्य की बुद्धि को नाश करने का प्रयास करने से,
- उनको अपमान और हानि देने से,

→ **मनुष्य की बुद्धि अवश्य ही विपरीत हो जाती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 115)

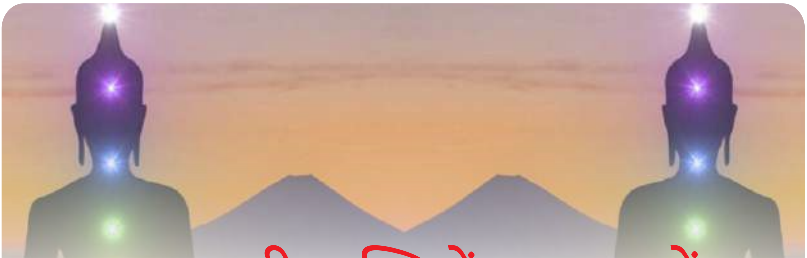

112. ज्ञान की प्राप्ति में बाधा क्यों आती है अथवा जल्दी याद न होने का क्या कारण है?

- किसी के ज्ञान की प्रशंसा न सुनने से और उससे ईर्ष्या करने से,
- जानते हुये भी किसी को ज्ञान न देने से,
- कहीं ये मेरे जितना ज्ञानी न बन जाये, इस डर से ज्ञान न देने से,
- किसी के ज्ञानाभ्यास में विघ्न डालने से,

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक - 6/10 सूत्र)

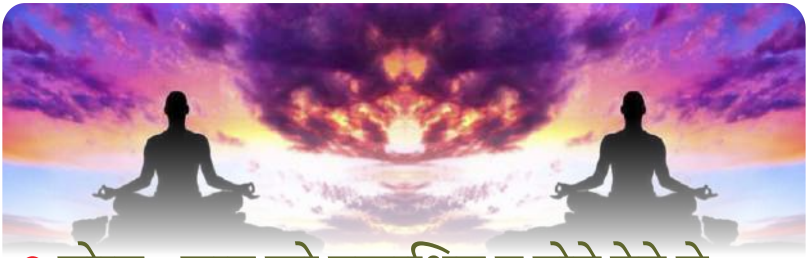

- योग्य - ज्ञान को प्रकाशित न होने देने से,
- सही - ज्ञान में दोष लगाने से,
- गुरु के प्रतिकूल चलने से,
- अयोग्य समय में पढ़ने से,
- सच्चे शास्त्रों के प्रति अश्रद्धा करने से,
- अभ्यास में आलस्य करने से,
- अनादर पूर्वक पढ़ने से,
- गुरु- आदि के पढ़ाते समय स्वयं पढ़ाने से,

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक - 6/ 10 सूत्र)

- ज्ञान का मद/ अहंकार करने से,
- झूठा / मिथ्या उपदेश देने से,
- ज्ञान और ज्ञानी का अपमान करने से,
- अपनी बात का दुराग्रह / हठ करने से,
- कुछ भी बकवाद करने से,
- विषय अथवा सूत्र के विरुद्ध अर्थ करने से,
- ग्रन्थों को बेचने से;

→ ज्ञान की प्राप्ति में मनुष्य को बाधा उत्पन्न होती है !!!

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक - 6/ 10 सूत्र)

113. दृष्टि में बाधा का अथवा आँखों में कमज़ोरी आने का क्या कारण है?

- किसी के देखने में विघ्न डालने से,
- ईर्ष्या करने से,
- किसी की आँखें फोड़ देने से,
- नेत्रों के उपकरण वा औषधि छिपाने से,
- इन्द्रियों के विपरीत प्रवृत्ति करने से,

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक - 6/ 10 सूत्र)

- दृष्टि का अभिमान करने से,
- लम्बी नींद लेने से,
- दिन में सोने से,
- आलस्य करने से,
- नास्तिक होने से,
- सम्यग्दृष्टि में दूषण लगाने से,

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक - 6/ 10 सूत्र)

- कुतीर्थ / हिंसकतीर्थों की प्रशंसा करने से,
- मुनियों के प्रति ग्लानी करने से,
- हिंसा करने से,
- किसी की सुंदर-दृष्टि की प्रशंसा न करने से;

→ **दृष्टि में बाधा और आँखों में कमजोरी आती है !!!**

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक - 6/10 सूत्र)

114. मनुष्यों को दुःख के दिन क्यों आते हैं ?

- अपने में, दूसरों में और दोनों के विषय में पीड़ा के परिणाम होने से,
- प्रिय और उपकारी चीज़ के वियोग के कारण भाव बिगाड़ने से,
- निंदा आदि हो जाने पर दुःख करने से,
- आँसू गिराते हुये रोने से,

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक - 6/ 11 सूत्र / भगवती आराधना गाथा 446)

- किसी को मार देने से,
- संक्लेशता पूर्वक चिल्ला-चिल्ला के रोने से,
- अशुभ- प्रयोग करने से,
- दूसरों का अपवाद करने से,
- चुगली करने से,
- अंग और उपांगों को छेदने-भेदने से,
- जीवों को ताड़न, त्रासन, तर्जन, भर्त्सन, तक्षण, विशंसन, बंधन, रोधन, मर्दन, दमन, विहेड़न आदि करने से,

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक - 6/ 11 सूत्र / भगवती आराधना गाथा 446)

- परनिंदा करने से,
- आत्म प्रशंसा करने से,
- संक्लेशता करने से,
- जीवन में निष्प्रयोजन जीने से,
- निर्दय भावों से,
- हिंसा-महाआरंभ करने से,
- विश्वासघात करने से,

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक - 6/ 11 सूत्र / भगवती आराधना गाथा 446)

- पापकर्म से आजीविका करने से,
- अनर्थदण्ड करने से,
- विष, बाण, रस्सी, पिंजरा आदि हिंसक यन्त्र बनाने से,
- दुःखादि पापमिश्रित भाव करने से,

→ मनुष्यों को दुःख के दिन देखना पड़ते हैं !!!

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक - 6/ 11 सूत्र / भगवती आराधना गाथा 446)

115. सत्यधर्म, प्रभु, शास्त्र और गुरुओं पर श्रद्धा स्थिर न होने का क्या कारण है?

- अरिहंत भगवान, सच्चे शास्त्रों और धर्म का अपवाद करने से,
- मुनि संघ की और मुनियों की चर्चा में झूठा दूषण लगाकर उनका अपवाद करने से,

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक - 6/13 /तत्त्वार्थसार 24/27 सूत्र)

- स्वर्ग के देवों का अपवाद करने से,
- सत्य - मोक्षमार्ग को दूषित ठहराने से,
- असत्य-मार्ग को सच्चा बताने से;

→ **सत्यधर्म, प्रभु, शास्त्र और गुरुओं पर मनुष्यों की श्रद्धा स्थिर नहीं रह पाती है!!!**

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक - 6/13 /तत्त्वार्थसार 24/27 सूत्र)

116. योग्यता होने पर भी चारित्र की प्राप्ति का भाव क्यों नहीं होता है?

- स्वयं कषाय करने से,
- दूसरों में कषाय उत्पन्न कराने से,
- तपस्वीजनों के चारित्र में दूषण लगाने से,
- संक्लेशता पैदा करनेवाले वेश और व्रतों को धारण करने से,

(तत्त्वार्थ सूत्र / सर्वार्थसिद्धि / राजवार्तिक- 6/14)

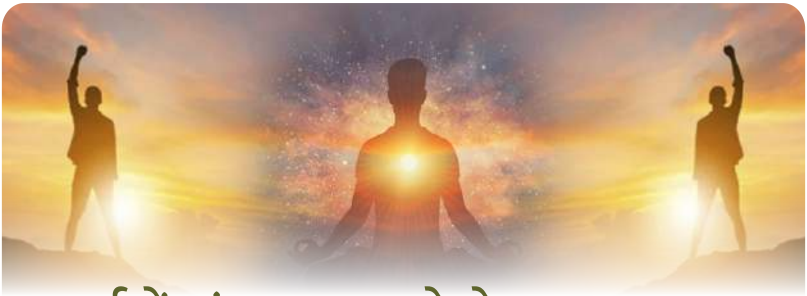

- धर्म में अंतराय डालने से,
- किसी को संयम से च्युत करने से,
- मांस, मदिरा से विरक्त को उसमें आसक्त करने से;

→ **मनुष्य योग्यता होने पर भी चारित्र की प्राप्ति के परिणाम नहीं कर पाता है !!!**

(तत्त्वार्थ सूत्र / सर्वार्थसिद्धि / राजवार्तिक- 6/14)

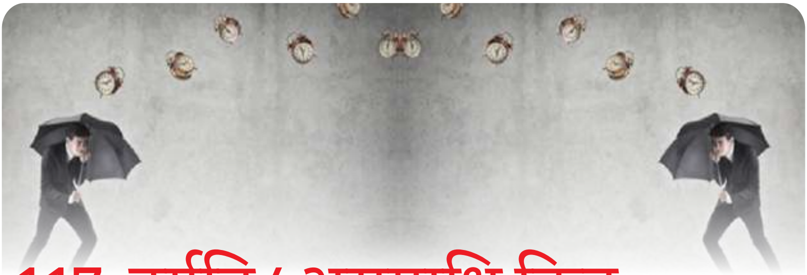

117. दुर्गति/ असमाधि किन कारणों से होती है?

- नीचे देखकर न चलने से,
- बिना देखे किसी भी चीज़ को रख देने से,
- अपने से बड़ों के बीच में बोलने से,
- बड़ों का तिरस्कार करने से,
- बड़ों के शिरहाने (मस्तक पर) सोने से,

(प्रतिक्रमण सूत्र)

- गुरुजनों के वचनों पर क्रोध करने से,
- गुरुओं के बीच में बोलने से,
- दूसरों का तिरस्कार करके बोलने से,
- सच्चे शास्त्रों के विरुद्ध बोलने से,
- थोड़ी-थोड़ी कलह करके विवाद को समाप्त न करने से,
- पीठ पीछे किसी की चुगली करने से,
- एक की बात दूसरे को कहकर झगड़ा पैदा कर देने से,

(प्रतिक्रमण सूत्र)

- सबकी आवाज का तिरस्कार करके स्वयं बड़े जोर-जोर से पढ़ने से, जिससे दूसरे अपना पाठ भूल जाये,
- बिना देखे खाना खाने से,
- प्रमाद पैदा करनेवाले गरिष्ठ भोजन का सेवन करने से,
- बहुत प्रकार के अपराध करने से,

(प्रतिक्रमण सूत्र)

- गीले पैरों से सूखी भूमि में प्रवेश करने से,
- भूख से ज्यादा भोजन करने से,
- अयोग्य समय में ग्रन्थ पाठ करने से,

→ मनुष्य मरकर दुर्गति में जाता है !!!

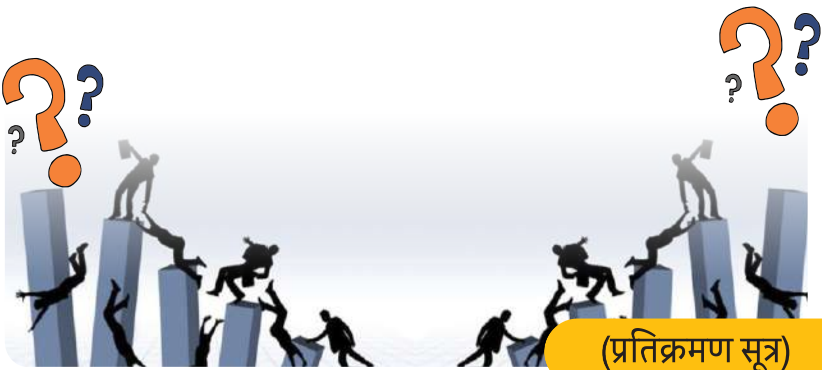

(प्रतिक्रमण सूत्र)

कर्म-रहस्य

भाग-2

[शुभ-फल-प्रदर्शन]

कहाँ, क्या लिखा है?

— विषय — शुभफल- प्रदर्शन	पृष्ठ
● मनुष्य बनने का क्या कारण है?	134
● किन कारणों से मनुष्य को सुपुत्र की प्राप्ति होती है?	135
● किस कारण से सुयोग्य और धार्मिक पति की प्राप्ति होती है?	136
● किन कारणों से सुपुत्री की प्राप्ति होती है?	137
● श्रेष्ठ पत्नी किन कर्मों से प्राप्त होती है?	138
● किन कारणों से मनुष्य यशस्वी और कीर्तिमान होता है?	139
● किन कर्मों से सुख देनेवाले कुटुंब की प्राप्ति होती है?	140
● किन कर्मोदय से मनुष्य को संयम धारण करने के भाव होते हैं?	141
● मनुष्य को शोक रहित सुखी जीवन कैसे प्राप्त होता है?	142
● मनुष्य किन पुण्य-कारणों से अनेक जीवों का स्वामी होता है?	143
● किन पुण्यकर्मों से मनुष्य को निरोगी शरीर की प्राप्ति होती है?	144
● किन पुण्यकर्मों से मनुष्य नीतिमान और बलवान बनता है?	145
● किन शुभकर्मों से मनुष्य समता भाव को प्राप्त करता है?	146
● किन शुभकर्मों से मनुष्य धर्मात्मा पैदा होता है?	147
● किस शुभकर्म से मनुष्य निर्भय होता है?	148
● किन शुभकर्मों से मनुष्य उदार हृदयवाला होता है?	149
● किन शुभकर्मों से मनुष्य यथार्थ बोलनेवाला वक्ता बनता है?	150
● किन शुभकर्मों से मनुष्य स्वतंत्र और सुखी होता है?	151
● मनुष्य को सुंदर शरीर किन शुभकर्मों से प्राप्त होता है?	152
● किन पुण्यकर्मों से मनुष्य आदर-सत्कार प्राप्त करता है?	153
● मनुष्य किन शुभकर्मों से ज्ञानी और व्रती बनता है?	154
● मनुष्य का किन पुण्यकर्मों के कारण अपने भाई-बंधुओं में प्रेम होता है?	155
● किन शुभकर्मों से मनुष्य को बिछडे हुये पुत्र की प्राप्ति होती है?	156
● किन कारणों से पिता-पुत्र में परस्पर स्नेह देखा जाता है?	157

कहाँ, क्या लिखा है?

— विषय — शुभफल- प्रदर्शन	पृष्ठ	— विषय — शुभफल- प्रदर्शन	पृष्ठ
● गर्भ में सुपुत्र आने के क्या-क्या शुभ चिह्न होते हैं?	158	● सत्यता के साथ आजीविका चलने का क्या कारण है ?	171
● किन कारणों से मनुष्य इच्छानुसार-पदार्थों को प्राप्त करता है?	159	● किन कारणों से, अनेक जीवों को एक साथ सुख की प्राप्ति होती है?	172
● किन शुभकारणों से देव-पर्याय प्राप्त होती है?	160	● किन शुभकारणों से अनेकजीव एक साथ मोक्ष जाते हैं ?	173
● किन कारणों से मनुष्य भोग-भूमि में पैदा होता है?	161	● किसी का भी परस्पर में मोह होने का क्या कारण है?	174
● आर्यखण्ड (उत्तमस्थान) में जन्म किन शुभ- कर्मों से होता है?	162	● किन कारणों से मनुष्य दुःख में सहायक होता है?	175
● किन पुण्यकर्मों से मनुष्य अल्पभोजी/ कम खानेवाला पैदा होता है?	163	● किन शुभकर्मों से मनुष्य का द्रव्य धर्म के ही काम में व्यय होता है?	176
● व्यवहार में चतुरता किन शुभकर्मों से प्राप्त होती है?	164	● किन पुण्यकर्मों से मनुष्य श्रुतज्ञानी बनता है?	177
● किन पुण्यकर्मों के कारण मनुष्य कवि बनता है?	165	● किन पुण्यकर्मों से मनुष्य शीलवान होता है?	178
● दीर्घायु और सुखी रहने का क्या कारण है?	166	● किन पुण्य-कारणों से मनुष्य सर्वप्रिय बनता है?	179
● किन शुभकर्मों से मनुष्य को पूर्ण अंग-उपांग प्राप्त होते हैं?	167	● किन कारणों से मनुष्य के घर में हमेशा मंगलगान होता रहता है?	180
● श्रेष्ठ/उत्तम कुल में उत्पन्न होने के शुभ कारण क्या हैं?	168	● किन शुभकर्मों से मनुष्य की वाणी प्रिय और मधुर होती है?	181
● हमेशा रहनेवाली आजीविका किन शुभकर्मों से प्राप्त होती है?	169	● संतोष और शान्ति का विशेष लाभ किन कारणों से होता है?	182
● किन कारणों से मनुष्य नीचकुल में उत्पन्न होकर भी धन-राज्यादि को प्राप्त करता है	170		

कहाँ, क्या लिखा है?

— विषय — शुभफल- प्रदर्शन	पृष्ठ
● पापों को उत्पन्न करनेवाली धन की वृद्धि का क्या कारण है?	183
● किन पुण्यकर्मों से देव और सज्जन भी मनुष्यों के दास बन जाते हैं ?	184
● किन कारणों से खर्च करने पर भी धन की वृद्धि होती रहती है?	185
● किन पुण्यकर्मों से मनुष्य की सर्वत्र कीर्ति फैलती है?	186
● किन शुभकर्मों से मनुष्यों को सुंदर शरीर की प्राप्ति होती है?	187
● श्रेष्ठ मनुष्यों में भी माननीय होने का क्या कारण है ?	188
● कौन सा पुण्य पाप की ही ओर ले जाता है?	189
● कौन सा पुण्य पुण्य की ही ओर ले जाता है ?	190
● किन शुभकर्मों से मनुष्य परस्पर में शान्ति से रहता है?	191
● सर्वार्थसिद्धि में उत्पन्न होने का क्या कारण है?	192
● तीर्थंकर बनने का क्या कारण है?	193
● किन शुभकर्मों से मनुष्य को जल्दी याद हो जाता है अथवा ज्ञान का की प्राप्ति में सहयोग होता है?	194
● सुंदर और निरोगी आँखें किन शुभकर्मों से प्राप्त होती है?	197

— विषय — शुभफल- प्रदर्शन	पृष्ठ
● किन शुभकर्मों से मनुष्य को सुख के दिन प्राप्त होते हैं?	199
● अल्प-पुरुषार्थ से शीघ्र ही चारित्र की प्राप्ति का भाव क्यों बनता है?	202
● किन शुभकर्मों से शुभ/मंगल शरीर और भाव प्राप्त होता है?	205
● किन शुभकर्मों से उच्चकुल और उच्चगोत्र की प्राप्ति होती है?	206
● किन पुण्यकर्मों से मनुष्य के सारे काम बिना रुके होते हैं?	207

1. मनुष्य बनने का क्या कारण है?

- मन्दक्रोध करने से,
- कुटिलता न होने से,
- निर्लोभ भावों के होने से,
- अल्पराग करने से,
- स्वदार - संतोष व्रत के पालने से,
- ईर्ष्या नहीं करने से,
- हमेशा दान देने से,
- सरल - परिणाम रखने से,
- जिनेन्द्र देव की पूजा करने से;

→ **जीवों के लिये मनुष्य बनने का मौका मिलता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 148)

(राजवार्तिक - 6/14- सूत्र)

2. किन कारणों से मनुष्य को सुपुत्र की प्राप्ति होती है?

- कुमार्ग में चलने वाले दूसरे के पुत्रों को युक्तिपूर्वक समझाकर सुमार्ग में लगाने से,
- साथ ही साथ माता-पिता और सज्जनों की सेवा में लगाने से;

→ **भव्य मनुष्य अगले जन्म में श्रेष्ठ और सुयोग्य पुत्र को प्राप्त करता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 122)

3. किस कारण से सुयोग्य और धार्मिक - पति की प्राप्ति होती है?

- किसी स्त्री के देवपूजा, पात्रदानादि धर्मकार्य में निमग्न रहने वाले पुरुषों को देखकर संतुष्ट होने से;

→ **उस स्त्री को अगले जन्म में अनेक दीनों की रक्षा करने वाले, गुणी और श्रेष्ठ पति की प्राप्ति होती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 123)

4. किन कारणों से सुपुत्री की प्राप्ति होती है?

- दान, पूजा आदि श्रेष्ठ कार्यों में तल्लीन रहने वाली कन्या को देखकर प्रसन्न होने से,
- सुशील और पढ़ने-लिखने में चित्त लगाने वाली कन्या को देखकर प्रसन्न होने से;

→ **पुरुष अगले जन्म में सीता के समान सुपुत्री प्राप्त करता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 124)

5. श्रेष्ठ पत्नी किन कर्मों से प्राप्त होती है?

- शीलवती स्त्रियों की प्रशंसा करके संतुष्ट होने से,
- दान, पूजा, पर-सेवा आदि सुख देने वाले कार्यों में हमेशा लगे रहने से,
- अत्यंत विनयवान स्त्री को देखकर संतुष्ट होने से;

→ **मनुष्य को श्रेष्ठपत्नी की प्राप्ति होती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 125)

6. किन कारणों से मनुष्य यशस्वी और कीर्तिमान होता है?

- तीर्थंकर भगवतों के गुणगान करने से,
- धर्मात्मा पुरुषों को विशेष आदर-सत्कार करने से,
- **निर्ग्रंथ - गुरुओं की सेवा करने से;**

→ **मनुष्य इस लोक में यशस्वी और कीर्तिमान होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 126)

7. किन कर्मों से सुख देने वाले कुटुंब की प्राप्ति होती है?

- किसी भी कुटुंब के परस्पर होनेवाले वैर- विरोध को शान्त करने से,
- किसी दुःखी कुटुंब को धनादि देकर संतुष्ट करने से,
- किसी सुखी कुटुंब को देखकर संतुष्ट होने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में योग्य और सुख देने वाले कुटुंब को प्राप्त करता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 127)

8. किन कर्मोंदय से मनुष्य को संयम धारण करने के भाव होते हैं?

- देवगति से आने के कारण,
- भक्तिपूर्वक माता-पिता की सेवा करने से,
- शिवप्रदायक धर्मात्माओं की संगति करने से,
- गुण और दोषों को जानने से;

→ **मनुष्य अवश्य ही संयम धारण करता है !!!**

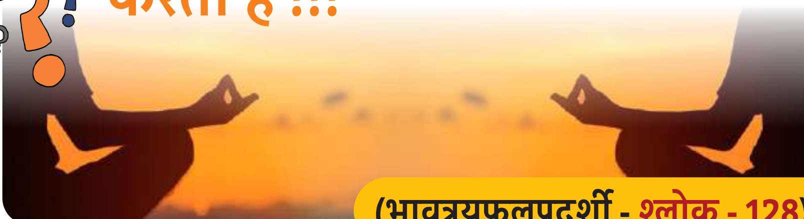

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 128)

9. मनुष्य को शोकरहित सुखी जीवन कैसे प्राप्त होता है?

- जिनबिंब प्रतिष्ठा को देखकर प्रसन्न होने से,
- देव, धर्म, गुरु की पूजा-भक्ति-सेवा को देखकर प्रसन्न होने से,
- जिनधर्म की वृद्धि, धर्मोत्सव और धर्मात्माओं को देखकर प्रसन्न होने से;

→ **मनुष्य को सुखी और शोकरहित जीवन प्राप्त होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 129)

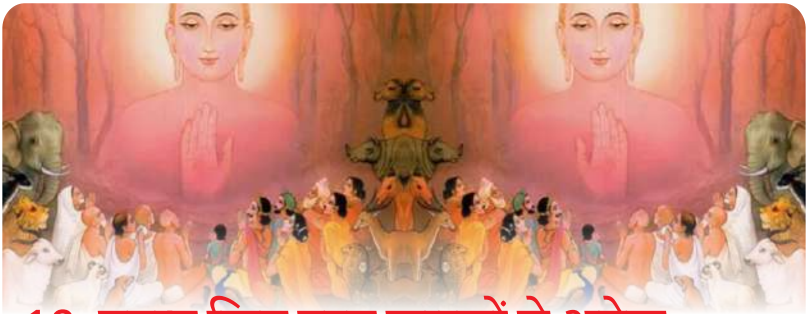

10. मनुष्य किन पुण्य कारणों से अनेक जीवों का स्वामी होता है?

- देव, शास्त्र, गुरु और धर्म की सेवा करके संतुष्ट होने से,
- धर्मात्माओं का आदर-सत्कार और विनय करके संतुष्ट होने से,
- धनहीन धर्मात्माओं को घर, अन्न, वस्त्रादि देकर संतुष्ट होने से;

→ **मनुष्य अनेक जीवों का स्वामी होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 130)

11. किन पुण्यकर्मों से मनुष्य को निरोगी शरीर की प्राप्ति होती है?

- मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविकाओं के रोगी होने पर उन्हें औषध- अन्न दान देने से,
- निर्मल पवित्र आसन देने से,
- रोगी मनुष्यों की सेवा-सुश्रूषा करने से;

→ **मनुष्य को रोग-रहित स्वस्थ शरीर की प्राप्ति होती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 131)

12. किन पुण्यकर्मों से मनुष्य नीतिमान और बलवान बनता है?

- दीन दुःखी जीवों की रक्षा करने से,
- असमर्थ जीवों को सुख देने का प्रयत्न करने से,
- भूखे-प्यासे जीवों को अन्न-जल देने से;

→ मनुष्य बुद्धि से नीतिमान और शरीर से बलवान बनता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 132)

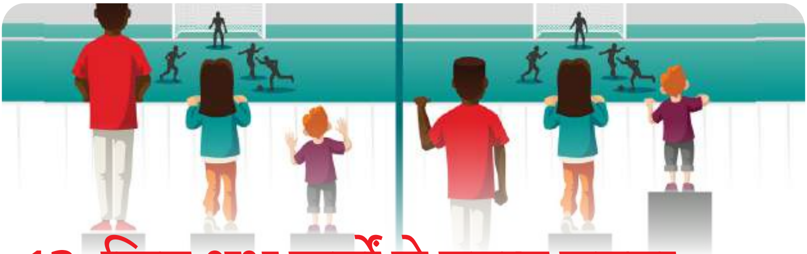

13. किन शुभ कर्मों से मनुष्य समता भाव को प्राप्त करता है?

- उत्तम प्राणियों की विनय करके संतुष्ट होने से,
- जिनदेव और निर्ग्रंथ-गुरु की शान्तमुद्रा देखकर प्रसन्न होने से,
- सज्जन पुरुषों को देखकर प्रसन्न होने से;

→ **मनुष्य इस पृथ्वी पर समतारूप परिणामों को धारण करता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 133)

14. किन शुभकर्मों से मनुष्य धर्मात्मा पैदा होता है ?

- किसी धर्मोत्सव को देखकर प्रसन्न होने से,
- अत्यन्त दयालु प्राणियों को देखकर प्रसन्न होने से,
- शीलव्रतों का पालन करने वालों को देखकर प्रसन्न होने से,
- निर्ग्रंथ मुनियों को देखकर प्रसन्न होने से;

→ मनुष्य अगले जन्म में धर्मात्मा पैदा होता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 134)

15. किस शुभकर्म से मनुष्य निर्भय होता है ?

- दुष्ट राजा या दुष्ट क्रोधी लोगों के द्वारा सताये हुये दीन-दुःखियों को अन्न-जल- अभयदान आदि देकर उनकी रक्षा करने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में निर्भय होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 135)

16. किन शुभकर्मों से मनुष्य उदार हृदयवाला होता है ?

- निर्ग्रंथ मुनियों को आहार दान देने से,
- आहार दान की अनुमोदना करने से,
- मिथ्यादृष्टियों को मोक्षमार्ग में लगाने से,
- मुनियों को आहारदान देकर अपने हृदय में हर्ष मनाने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में उदार हृदयवाला होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 136)

17. किन शुभकर्मों से मनुष्य यथार्थ बोलने वाला वक्ता बनता है ?

- अनेक विद्यार्थियों को विद्या दान देने से,
- विद्वानों की सेवा करने से,
- अपने को आत्मज्ञान करानेवाले गुरुओं की प्रशंसा करने से,
- विद्यार्थियों को पढ़ने के लिये जैन-शास्त्रों को देने से;

→ मनुष्य अगले जन्म में यथार्थ बोलने वाला वक्ता बनता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 137)

18. किन शुभकर्मों से मनुष्य स्वतंत्र और सुखी होता है ?

- कुटुंब-रहित प्राणियों को मन की शान्ति के लिये समझाने से,
- उनके लिये सुख-शान्ति के साधनरूप धन, घर, धान्यादि देने से,
- अन्न, वस्त्रादि से रहित मनुष्यों को अन्न- वस्त्रादि देकर संतुष्ट करने से;

→ **मनुष्य नियम से स्वतंत्र और सुखी होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 138)

19. मनुष्य को सुन्दर शरीर किन शुभकर्मों से प्राप्त होता है ?

- सभी लोग सुंदर शरीर को धारण करने वाले हो, ऐसी उत्तम इच्छा करने से,
- हमेशा भगवान और गुरुओं की भक्ति करने से,
- दूसरों के निरोग शरीर को देखकर संतुष्ट होने से;

→ **मनुष्य को सुन्दर शरीर की प्राप्ति होती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 139)

20. किन पुण्यकर्मों से मनुष्य आदर-सत्कार प्राप्त करता है ?

- अपनी आत्मभक्ति से भगवान और गुरुओं की सेवा करने से,
- देव-शास्त्र-गुरुओं के वचनों को मन से प्रमाण मानने से,
- सभी के साथ परस्पर में प्रेममय प्रवृत्ति रखने से;

→ **मनुष्य आदर-सत्कार को प्राप्त करता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 140)

21. मनुष्य किन शुभकर्मों से ज्ञानी और व्रती दोनों बनता है ?

- सप्त-व्यसनों को अत्यन्त दुःखदायी समझकर अनाचार प्रवृत्तियों की निंदा करने से,
- व्रत, उपवास, जिनपूजा और पात्रदान क्रिया, से युक्त पुरुषों की प्रशंसा करने से;

→ **मनुष्य ज्ञानी और व्रती दोनों बनता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 141)

22. मनुष्य का किन पुण्यकर्मों के कारण अपने भाई-बंधुओं में प्रेम होता है ?

- संसार में लक्ष्मी बढ़ाने वाली शान्ति स्थापित करने से,
- भाई-भाई में परस्पर स्नेह बढ़ाने वाली प्रवृत्ति करने से,
- परस्पर प्रेम से रहने वाले भाई-बंधुओं को देखकर संतुष्ट होने से;

→ **मनुष्य का अपने भाई-बंधुओं में प्रेम होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 142)

23. किन शुभ कर्मों से मनुष्य को बिछड़े हुये पुत्र की प्राप्ति होती है ?

- किसी के पुत्र का वियोग हो जाने पर उसके लिये धैर्य बंधाने से,
- उसके खोज करने के लिये प्रयत्न करने से,
- हमेशा उसके मिल जाने की ही बातें करने से,
- उसके न मिलने की विपरीत बातें न करने से;

→ **मनुष्य अपने बिछड़े हुये पुत्र की प्राप्ति कर लेता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 143)

24. किन कारणों से पिता-पुत्र में परस्पर स्नेह देखा जाता है ?

- पिता-पुत्र के परस्पर के प्रमोद को देखकर संतुष्ट होने से,
- उनके विनय और उपचार को देखकर प्रसन्न होने से,
- किसी पिता-पुत्र के परस्पर के विरोध को मिटाकर शान्ति स्थापित कर देने से;

→ **पिता-पुत्र में परस्पर स्नेह / प्रेम देखा जाता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 144)

25. गर्भ में सुपुत्र आने के क्या-क्या शुभ-चिह्न होते हैं?

- माता-पिता का हृदय प्रसन्न होना,
- उनके विचार निर्मल होना,
- माता-पिता की दान, पूजा आदि शुभकार्यों में प्रवृत्ति होना;

→ ये सब गर्भ में सुपुत्र आने के शुभ लक्षण हैं !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 145)

26. किन कारणों से मनुष्य इच्छानुसार-पदार्थों को प्राप्त करता है?

- मुनि, आर्यिका अथवा सामान्य जन के लिये पवित्र औषध और पवित्र भोजन- पानी देने से,
- सभी को सुखी बनाने की अभिलाषा करते रहने से;

→ मनुष्य इस संसार में इच्छानुसार पदार्थों को प्राप्त करता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 146)

27. किन शुभ कारणों से देव-पर्याय प्राप्त होती है?

- अनेक व्रत, उपवास, तप, जप और ध्यान करने से,
- भक्ति पूर्वक देव-शास्त्र और गुरु की सेवा-पूजा करने से,
- तीर्थयात्रा करने से,
- प्रतिदिन देवपूजा और आहार दान देने से,
- मंद कषाय रखने से,
- अकाम निर्जरा होने से,
- सच्चे देव - शास्त्र और गुरु के प्रति सच्चा श्रद्धान रखने से;

→ **देव बनने का मौका मिलता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 147

28. किन कारणों से मनुष्य भोग-भूमि में पैदा होता है?

- मुनियों के लिये आहारदान देने से,
- आहारदान की अभिलाषा करने से,
- आहारदान देनेवालों की प्रशंसा करने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में भोग-भूमि में पैदा होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 149

29. आर्यखण्ड (उत्तमस्थान) में जन्म किन शुभ कर्मों से होता है ?

- अत्यन्त निकृष्ट स्थानों में निवास करनेवालों को उठाकर सुख देनेवाले उत्तमस्थानों में बसा देने से,
- फिर उनको सुख देने वाले अन्न-वस्त्र देकर संतुष्ट होने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में आर्यखण्ड (उत्तमस्थान) में जन्म लेता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 150)

30. किन पुण्यकर्मों से मनुष्य अल्पभोजी/ कम खानेवाला पैदा होता है?

- मुनियों को आहारदान देकर संतुष्ट होने से,
- दीन-दरिद्रियों को अन्न, वस्त्र, घर आदि देकर संतुष्ट होने से,
- थोड़ा सा भोजन खाकर संतुष्ट होने से;

→ **मनुष्य अल्पभोजी अर्थात् कम खाने वाला पैदा होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 151)

31. व्यवहार में चतुरता किन शुभकर्मों से प्राप्त होती है?

- विद्या, कला आदि में चतुर मनुष्यों को देखकर संतुष्ट होने से,
- विवेकी और ज्ञानी लोगों की प्रशंसा करने से,
- मुनियों की सेवा करने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म में व्यवहार चतुर होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 152)

32. किन पुण्यकर्मों के कारण मनुष्य कवि बनता है?

- वीतरागी - देवों की कथा कहने से,
- उनकी स्तुति करने से,
- उनके चरित्र को कहने वाले उत्तम कवियों के गुणों वर्णन करने से,
- उनकी प्रशंसा करने से,
- परंपरा से चले आये धर्मगुरुओं का गुणगान करने से;

→ मनुष्य उत्तम कवि बनता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 153)

33. दीर्घायु और सुखी रहने का क्या कारण है?

- किसी सिंहादि-हिंसक प्राणियों से किसी के प्राण बचाने से,
- बंदीगृह में बंधे हुये प्राणियों को छुड़ाने से,
- रोगी और दु:खी लोगों के लिये निर्मल औषधि और अन्न प्रदान करने से;

→ मनुष्य दीर्घायु और सुखी रहता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 154)

34. किन शुभकर्मों से मनुष्य को पूर्ण अंग- उपांग प्राप्त होते है?

- हमेशा अपने समान अन्यजीवों के अंग- उपांगों की रक्षा करने से,
- हमेशा दूसरों के अंग-उपांगों को पुष्य करने का प्रयत्न करने से;

→ **मनुष्य अगले जन्म से पूर्ण अंग- उपांग प्राप्त करता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 155)

35. श्रेष्ठ/उत्तम कुल में उत्पन्न होने के शुभ- कारण क्या हैं?

- दूसरों की प्रशंसा और अपनी निंदा करने से,
- दीन-हीन पुरुषों की सेवा करने से,
- समस्त संसार में शान्ति स्थापित करने वाले प्रिय और सत्य वचन बोलने से;

→ **मनुष्य उत्तम कुल में उत्पन्न होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 156)

36. हमेशा रहने वाली आजीविका किन शुभकर्मों से प्राप्त होती है?

- दीन-हीन पुरुषों को आजीविका में लगा देने से,
- अपने-अपने स्थान में ठहरे हुये पशु-पक्षियों को अन्न-जल देकर संतुष्ट होने से;

→ **मनुष्य शान्त रीति से चलनेवाली और हमेशा रहनेवाली आजीविका प्राप्त करता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 157)

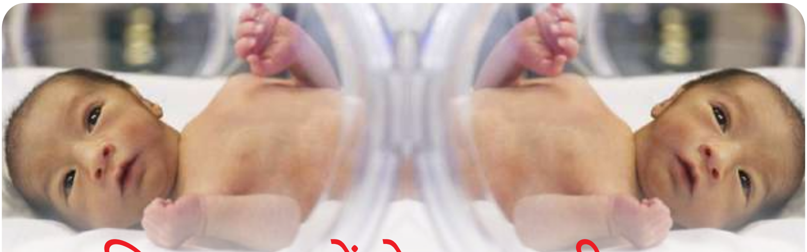

37. किन कारणों से मनुष्य नीचकुल में उत्पन्न होकर भी धन-राज्यादि को प्राप्त करता है?

- अज्ञानता पूर्वक तपस्या करनेवाले मिथ्यादृष्टि साधुओं की सेवा, प्रशंसा और विनय करने से,
- उनको अन्न, जल अथवा औषधि देने से;

→ **मनुष्य नीचकुल में उत्पन्न होकर भी धन-राज्यादि को प्राप्त करता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 158)

38. सत्यता के साथ आजीविका चलने का क्या कारण है ?

- धर्मात्माओं को बिना किसी छल-कपट के भोजन-पानी देने से,
- धर्मात्माओं की प्रशंसा करने से,
- दरिद्री होने पर भी हीनवृत्ति धारण न करने से;

→ **मनुष्य की अगले जन्म में सत्यता के साथ अपनी आजीविका चलती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 159)

39. किन कारणों से अनेक जीवों को एक साथ सुख की प्राप्ति होती है ?

- एक साथ पंचकल्याणक विधि को देखकर अथवा तीर्थयात्रा करके प्रसन्न होने से,
- एक साथ मुनियों को अन्नदान देकर संतुष्ट होने से;

→ **अनेक जीवों को एक साथ सुख की प्राप्ति होती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 160)

40. किन शुभकारणों से अनेक जीव एक साथ मोक्ष जाते हैं ?

- तीर्थंकर भगवान की दीक्षा के समय एक साथ भक्तिपूर्वक उस दीक्षा की प्रशंसा करने से,
- सच्चे मुनियों की स्तुति और प्रशंसा एक साथ मिलकर करने से;

→ **प्राय: अनेक मनुष्य एक साथ मोक्ष को जाते हैं !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 161)

41. किसी का भी परस्पर में मोह होने का क्या कारण है ?

- माता-पिता, सुपुत्र, भाई-बंधु आदि का मिलकर भक्तिपूर्वक एक-दूसरे का उपकार करने से,
- पूर्वभव के किसी भाई व मित्र के जीव को देखने से;

→ इस भव में परस्पर में मोह उत्पन्न होता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 162)

42. किन कारणों से मनुष्य दुःख में सहायक होता है ?

- पूर्वजन्म में किसी के लिये वस्त्र, औषधि, भोजन-पानी देने से,
- विपत्ति में किसी की रक्षा करने से,
- हृदय से किसी की विशेष प्रशंसा करने से;

→ **आगे जन्मों में वह जीव मनुष्य के दुःख में सहायक होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 163)

43. किन शुभकर्मों से मनुष्य का द्रव्य धर्म के ही काम में व्यय होता है

- किसी भी धर्मकार्य में अथवा धर्म की प्रभावना करने में अपना धन खर्च करने से,
- मोक्ष की राह बतानेवाले धर्मशास्त्रों के पठन, पाठन और प्रकाशन कराने में तल्लीन रहने से;

→ मनुष्य का द्रव्य धर्म के ही काम मे व्यय होता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 164)

44. किन पुण्यकर्मों से मनुष्य श्रुतज्ञानी बनता है ?

- भक्तिपूर्वक गुरु की आज्ञा का पालन करने से,
- भक्तिपूर्वक गुरु की सेवा, विनय, स्तुति और प्रशंसा करने से,
- जिनवाणी का प्रकाशन कराने से,
- आत्मा के शुद्ध स्वरूप की प्रशंसा करने से;

→ मनुष्य श्रुतज्ञानी अर्थात् ज्ञानवान बनता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 165)

45. किन पुण्यकर्मों से मनुष्य शीलवान होता है ?

- शीलवान पुरुष और स्त्रियों की सेवा-सुश्रूषा करने से,
- निर्ग्रन्थ मुनियों के समीप रहकर, उनकी सेवा करने से,
- अपनी आत्मा के शुद्ध स्वरूप की चर्चा करने से;

→ मनुष्य शीलवान होता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 166)

46. किन पुण्यकारणों से मनुष्य सर्वप्रिय बनता है ?

- धर्मात्माओं के प्रति प्रेम धारण करने से,
- धर्म में अनुराग रखने से,
- अरहंत-देव और निर्ग्रंथ- गुरुओं में अनुराग रखकर उनकी भक्ति करने से,
- क्षमा, संयम आदि दशधर्मों में अनुराग रखने से,
- धर्मात्माओं की प्रशंसा और अपनी निंदा करने से;

→ मनुष्य इस संसार में सर्वप्रिय बनता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 167)

47. किन कारणों से मनुष्य के घर में हमेशा मंगल गान होता रहता है ?

- भक्ति पूर्वक परमात्मा जिनेन्द्रप्रभु पूजा करने से,
- पंचकल्याणक प्रतिष्ठा और रथोत्सव करने से,
- तीर्थंकर परमदेव की स्तुति करने से,
- जीवों के दुःखों को दूर करने से;

→ मनुष्य के घर में हमेशा मंगलगान हुआ करता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 168)

48. किन शुभकर्मों से मनुष्य की वाणी प्रिय और मधुर होती है ?

- सरस्वती / जिनवाणी माँ की सेवा करने से,
- मधुर-मधुर गीतों के साथ जिनेन्द्र देव, परमात्मा की भक्ति करने से,
- प्रियभाषण करने के लिये समीचीन प्रयत्न करने से;

→ **मनुष्य की वाणी कोयल के समान प्रिय और मधुर होती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 169)

49. संतोष और शान्ति का विशेष लाभ किन कारणों से होता है ?

- निर्ग्रंथ गुरुओं की विशेष सेवा करने से,
- जिनवाणी / सरस्वती माँ की विशेष सेवा करने से,
- इन्द्रिय और मन को जीतने वालों की विशेष सेवा करने से,
- देव, शास्त्र और गुरुओं की विशेष स्तुति करने से;

→ मनुष्य को संतोष और शान्ति का विशेष लाभ हुआ करता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 170)

50. पापों को उत्पन्न करने वाली धन की वृद्धि का क्या कारण है ?

- मिथ्याव्रतों का पालन और मिथ्या तपश्चरण करने के साथ साथ परोपकार में लगे रहने से,
- सिर्फ मिथ्या क्रियाओं में चित्त लगे रहने के प्रभाव से;

→ मनुष्य के लिये पापों को उत्पन्न करने वाली धन की वृद्धि होती है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 171)

51. किस पुण्यकर्मों से देव और सज्जन भी मनुष्यों के दास बन जाते हैं ?

- सभी जीव सुखी हों, सभी जीव धार्मिक हों, सभी जीव जिनेन्द्र भगवान के भक्त हों, सभी जीव निर्ग्रंथ गुरुओं के भक्त हों ऐसी उत्तम भावना होने से;

→ **देव और सज्जन पुरुष मनुष्य के दास बन जाते हैं !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 173)

52. किन कारणों से खर्च करने पर भी धन की वृद्धि होती रहती है ?

- निर्ग्रंथ मुनियों को आहार व औषधदान देने से,
- उनके लिये रुकने का स्थान (वसतिका) बनवाने से,
- शास्त्र प्रकाशन और दान करने से;

→ **खर्च करने पर भी धन की निरन्तर वृद्धि होती रहती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 174)

53. किस पुण्यकर्मों से मनुष्य की सर्वत्र कीर्ति फैलती है ?

- संसार को बढ़ानेवाले मान और अपमान को सर्वथा त्यागकर सभी प्राणियों के हित के लिये प्रयत्न करने से;

→ मनुष्य की यशः कीर्ति सर्वत्र फैलती है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 175)

54. किन शुभ कर्मों से मनुष्यों को सुंदर शरीर की प्राप्ति होती है ?

- शुद्ध-आत्मा के अनंतसुख की चर्चा करने से,
- शुद्ध- आत्मा के शुद्धस्वरूप में प्रवृत्ति करने से,
- शुद्ध- आत्मा में तृप्त रहनेवाले निर्बंध मुनियों की सेवा करने से,
- किसी के सुन्दर शरीर को देखकर ईर्ष्या न करके उसकी प्रशंसा करने से;

→ **मनुष्य को सुंदर शरीर की प्राप्ति होती है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 176)

55. श्रेष्ठ मनुष्यों में भी माननीय होने का क्या कारण है ?

- सभी प्राणियों के हित के लिये प्रयत्न करने से,
- सज्जनों की विनय, सेवा-सुश्रूषा करने से,
- यथायोग्य रीति से सज्जनों का अभिवादन करने से;

→ **मनुष्य श्रेष्ठ- मनुष्यों में भी माननीय होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 177)

56. कौन सा पुण्य पाप की ही ओर ले जाता है ?

- यह जीव जब पापकर्मों के मंदोदय में मिथ्यात्व के साथ पुण्यकार्य करता है तब वह पुण्य परलोक में थोड़ा सा सुख दिखला देता है;

→ **परन्तु बाद में पापमार्ग में ही ले जाता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 178)

57. कौन सा पुण्य पुण्य की ही ओर ले जाता है ?

- यह जीव जब दर्शनमोहनीय कर्म का नाश होने से सम्यक्त्व के साथ जो कुछ भी पुण्यकार्य करता है;

→ वह पुण्यकर्म उदय में आने पर पुण्य की ओर ही ले जाता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 179)

58. किन शुभ कर्मों से मनुष्य परस्पर में शान्ति से रहता है ?

- निर्ग्रंथ मुनियों के उपदेश रूपी अमृत का पान करके तृप्त रहने से,
- अपने और दूसरों के कल्याण करने में हमेशा चतुर रहने से,हमेशा मोक्ष की इच्छा करने से;

→ **मनुष्य परस्पर में सबके साथ शान्ति से रहता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 180)

59. सर्वार्थसिद्धि में उत्पन्न होने का क्या कारण है ?

- सदाकाल धर्म में अनुराग रखने से,
- अपनी आत्मा के शुद्ध-स्वरूप के प्राप्त होने की अभिलाषा रखने से,
- अपनी शुद्धात्मा का अनुभव करने से,
- पंचपरमेष्ठियों की विशेष सेवा करने से,
- धर्मध्यान और शुक्लध्यान को धारण करने से;

→ मनुष्य सर्वार्थसिद्धि में उत्पन्न होता है !!!

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 181)

60. तीर्थंकर बनने का क्या कारण है ?

- दर्शनविशुद्धि आदि सोलह प्रकार की तीर्थंकर भावनाओं को भली प्रकार से भाने से,
- संसार रूपी महासागर में पड़े हुये जीवों को उठाकर मोक्ष में स्थापित करने के लिये प्रयत्न करने से;

→ **मनुष्य सर्वार्थसिद्धि में उत्पन्न होता है !!!**

(भावत्रयफलप्रदर्शी - श्लोक - 182)

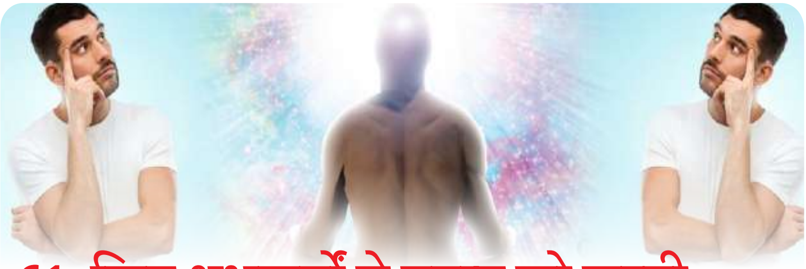

61. किन शुभकर्मों से मनुष्य को जल्दी याद हो जाता है अथवा ज्ञान की प्राप्ति में सहयोग होता है ?

- किसी के ज्ञान की प्रशंसा सुनकर उसकी अनुमोदना और प्रशंसा करने से,
- किसी विषय के जानकार होकर, किसी को उस विषय का ज्ञान देने से,
- सभी मेरी तरह ज्ञानी बन जायें" ऐसी भावना से सभी को ज्ञान देने से,
- किसी के ज्ञानाभ्यास में सहयोग देने से,

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक- 6/10 सूत्र)

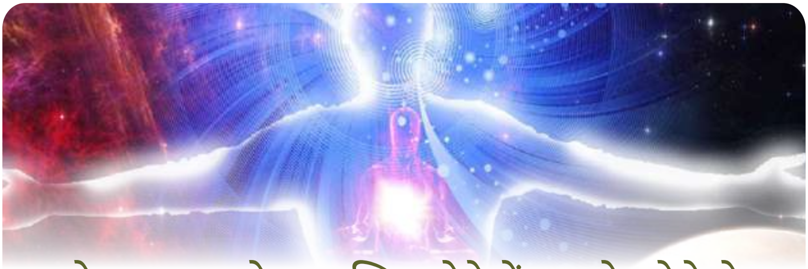

- योग्य-ज्ञान को प्रकाशित होने में सहयोग देने से,
- सही ज्ञान की प्रशंसा करने से,
- गुरुओं के अनुकूल चलने से,
- योग्य समय में पढ़ने-लिखने से,
- सच्चे शास्त्रों के प्रति श्रद्धा करने से,
- अभ्यास में आलस्य न करने से,
- आदर पूर्वक पढ़ने से,
- गुरु आदि के पढ़ाते समय एकाग्र होकर पढ़ने से,
- ज्ञान का मद/ अहंकार न करने से,
- सच्चा - समीचीन उपदेश देने से,

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक- 6/10 सूत्र)

- ज्ञान और ज्ञानी का सम्मान करने से,
- अपनी बात का हठ या दुराग्रह न करने से,
- वचनों का सही-सही प्रयोग करके बकवाद न करने से,
- विषय और सूत्रों के विरुद्ध अर्थ न करने से,
- ग्रन्थों को प्रकाशित कराने से अथवा बिना मूल्य लिये बाटने से;

→ **मनुष्य को जल्दी याद होता है अथवा ज्ञानप्राप्ति में सहयोग मिलता है !!!**

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक- 6/10 सूत्र)

62. सुंदर और निरोगी आँखें किन शुभकर्मों से प्राप्त होती है ?

- किसी के देखने में सहयोग करने से,
- ईर्ष्या न करने से,
- किसी की आँखों की रक्षा करने से,
- नेत्रों के उपकरण वा औषधि देने से,
- इन्द्रियों के अनुकूल प्रवृत्ति करने से,
- दृष्टि का अभिमान न करने से,
- लम्बी नींद न लेने से,

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक- 6/10 सूत्र)

- दिन में न सोने से,
- आलस्य न करने से,
- आस्तिक्य होने से,
- सम्यग्दृष्टि की प्रशंसा करने से,
- अहिंसक, सम्यक तीर्थों की प्रशंसा करने से,
- मुनियों के प्रति ग्लानि न करने से,
- अहिंसक प्रवृत्ति करने से,
- किसी की सुंदर-दृष्टि की प्रशंसा करने से;

→ **मनुष्य को सुंदर और निरोगी आँखें प्राप्त होती हैं !!!**

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक- 6/10 सूत्र)

63. किन शुभकारणों से मनुष्य को सुख के दिन प्राप्त होते हैं ?

- अपने, दूसरों और दोनों के विषय में पीड़ा के परिणाम न होने से,
- प्रिय और उपकारी चीज़ों के वियोग होने पर भाव न बिगाड़ने से,
- निंदा आदि के होने पर भी प्रसन्न रहने से,
- रुदन न करने से,
- किसी की रक्षा करने से,

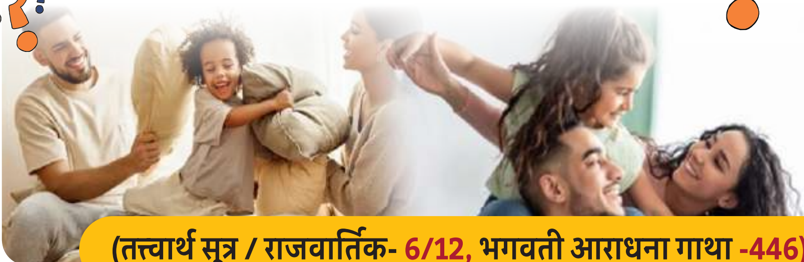

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक- 6/12, भगवती आराधना गाथा -446)

- धैर्यपूर्वक शान्त चित्त होकर दुःख के दिनों को सहन करने से,
- शुभ-प्रयोग करने से,
- दूसरों के दोष ढाकने से,
- चुगली न करने से,
- अन्य प्राणियों के अंग- उपांगों का छेदन- भेदन न करने से,
- अंग-उपांगों पर की प्रशंसा और स्वयं की निंदा करने से,
- संक्लेशता न करने से,

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक- 6/12, भगवती आराधना गाथा - 446)

- व्रतियों और महाव्रतियों पर अनुकम्पा करने से,
- समीचीन, कमाये हुये द्रव्य का दान देने से,
- प्राणियों को ताड़न, त्रासन, तर्जन, भर्त्सन, तक्षण विशंसन, बन्धन, रोधन, मर्दन,दमन,विहेड़न आदि न करने से,
- प्रयोजन सहित जीवन जीने से,
- सदय-भावों से,
- हिंसा और महाआरंभ न करने से,
- विश्वसनीय / विश्वासपात्र बनने से,
- पुण्यक्रियाओं के साथ आजीविका करने से,

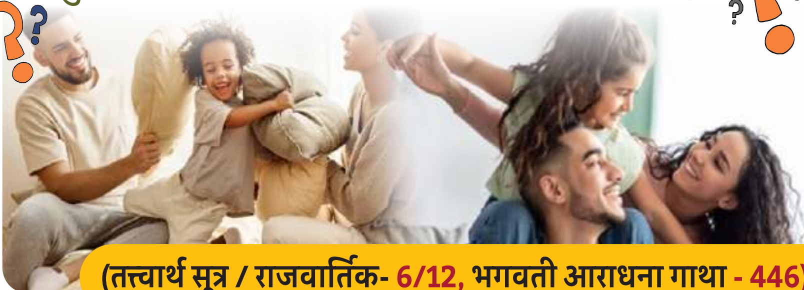

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक- 6/12, भगवती आराधना गाथा - 446)

- अनर्थदण्ड न करने से,
- विष, बाण, रस्सी, पिंजर आदि हिंसक यन्त्र न बनाने से,
- सुखादि - पुण्यमिश्रित भाव करने से,
- संयम धारण करने से,
- क्रोध, मान, माया, लोभ आदि न करने से,
- मुनियों की वैयावृत्त्य करने से;

→ **मनुष्य के जीवन में शीघ्र ही सुख के दिन आते हैं !!!**

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक- 6/12, भगवती आराधना गाथा - 446)

64. अल्प पुरुषार्थ से शीघ्र ही चारित्र की प्राप्ति का भाव क्यों बनता है ?

- स्वयं कषाय न करने से,
- शान्तभाव धारण करने से,
- दूसरों में कषाय न उत्पन्न करने से,
- तपस्वीजनों के चारित्र की प्रशंसा करने से,
- शालीन और योग्य वेश को धारण करने से,

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक/सर्वार्थसिद्धि -सूत्र 6/14)

- संक्लेशता पैदा करनेवाले व्रतों को धारण करने से,
- धर्मकार्य में सहायता करने से, विघ्न न डालने से,
- किसी के संयम की रक्षा करने से,
- मांस, मदिरा में आसक्त को उससे विरक्ति दिलाने से;

→ **मनुष्य अल्पपुरुषार्थ से ही शीघ्र चारित्र प्राप्ति का भाव बना लेता है !!!**

(तत्त्वार्थ सूत्र / राजवार्तिक/सर्वार्थसिद्धि -सूत्र 6/14)

65. किन शुभकर्मों से शुभ/मंगल शरीर और भाव प्राप्त होता है ?

- मन, वचन और शरीर की सरलता से,
- परस्पर में विसंवाद न करने से,
- मन, वचन और शरीर का सदुपयोग करने से,
- सभी के प्रति शुभभावों को रखने से;

→ **मनुष्य शुभ / मंगल शरीर और भावों को प्राप्त होता है !!!**

(तत्त्वार्थ सूत्र / सर्वार्थसिद्धि 6/23)

66. किन शुभकर्मों से उच्चकुल और उच्चगोत्र की प्राप्ति होती है ?

- दूसरों की प्रशंसा करने से,
- स्वयं की निंदा करने से,
- विनम्रवृत्ति को धारण करने से, मद-अहंकार रहित होने से,
- उच्चगोत्र की प्रशंसा करने से,
- स्वगुणों को ढ़ाकने से और दूसरों के गुणों को प्रकट करने से;

→ **मनुष्य उच्चकुल और उच्चगोत्र को प्राप्त करता है!!!**

(तत्त्वार्थ सूत्र / सर्वार्थसिद्धि 6/26)

67. किन पुण्यकर्मों से मनुष्य के सारे काम बिना रुके होते हैं ?

- किसी के शुभकार्यों में सहयोग करने से,
- पर के दानादि में विघ्न न करने से,
- किसी के लिये भोग-उपभोग की सामग्री उपलब्ध कराने से,
- किसी के आत्मबल को प्रकट करने में सहायता करने से;

→ मनुष्य के सारे काम बिना रुके पूर्ण होते हैं !!!

(तत्त्वार्थ सूत्र / सर्वार्थसिद्धि 6/27)